सेनानी

वर्ष 2021-22
अंक– 12

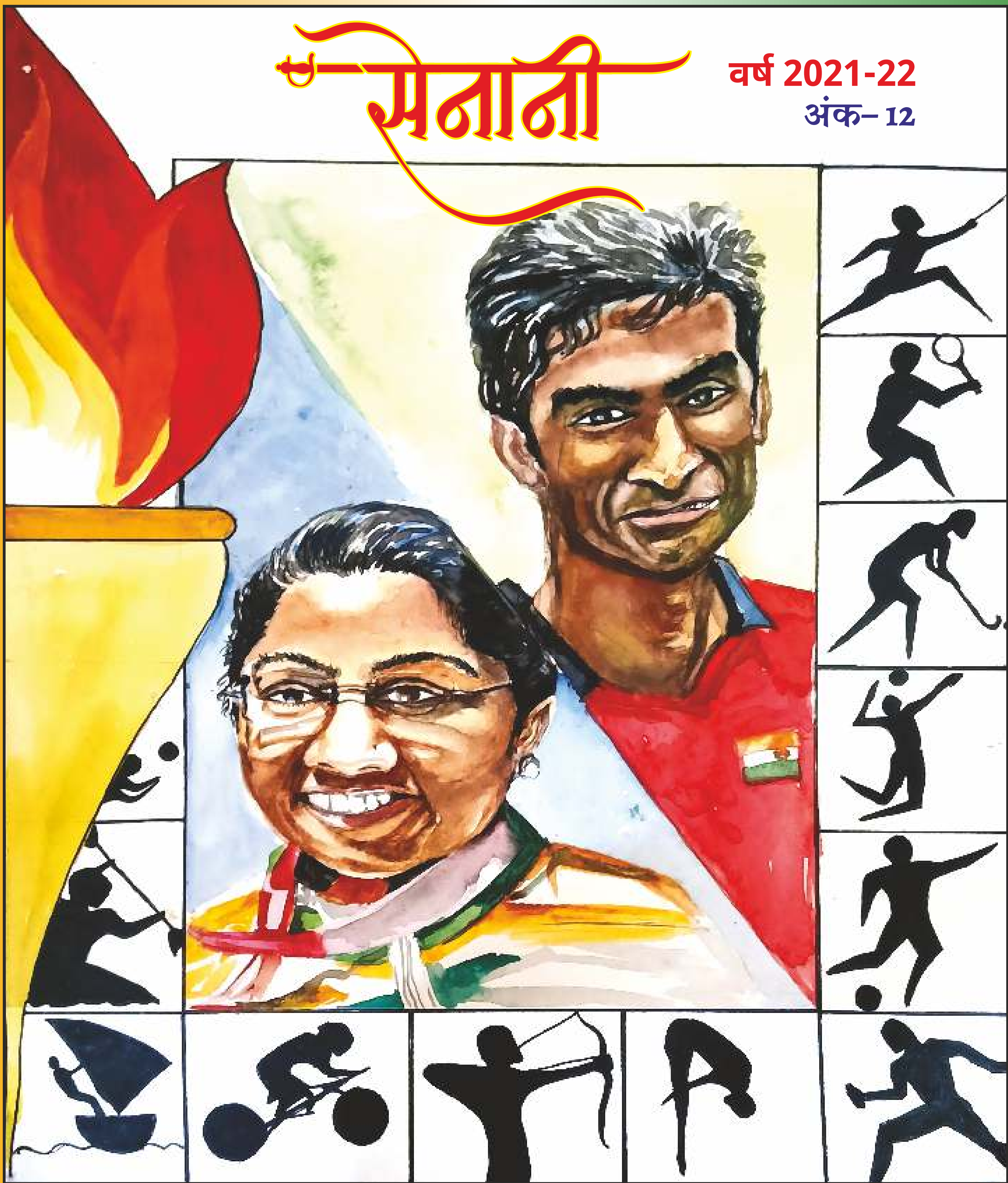

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय भारत सरकार
जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI, सेक्टर-III, सॉल्ट लेक, कोलकाता - 700097, पश्चिम बंगाल, दूरभाष: 033-23350052
ई-मेल: dir-bpore@esic.nic.in, ol-barrackpore.wb@esic.nic.in

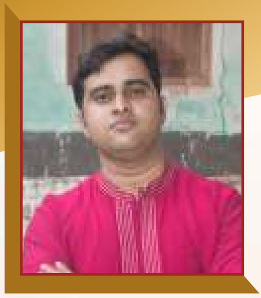

मुखपृष्ठ पेंटिंग

राजू कुमार दास, आशुलिपिक

वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी का कार्यालय

टोकियो पैरालम्पिक 2020 में मेडल विजेता

भाविना पटेल

29 अगस्त 2021 की सुबह 7:30 बजे का समय टोकियो ओलंपिक 2020 में भारत के शानदार प्रदर्शन के बाद पैरालंपिक खेलों का वह क्षण, जो भारत के लिए पुनः स्वर्णिम साबित हो सकता था। तमाम खेल प्रेमी टेलिविजन पर नजर गड़ाए और अंतर्मन में भारत की जीत के लिए प्रार्थना में हाथ जोड़े बैठे थे। आज क्लास 4 वर्ग के टेबल टेनिस का फाइनल मैच विश्व की नं.12 खिलाड़ी भारत की भाविना पटेल, जिसने सेमीफाइनल में विश्व रैंकिंग में तीसरे नंबर की चीनी खिलाड़ी को मात दी थी, का मुकाबला विश्व की नं.1 खिलाड़ी चीन की झोउयिंग के बीच था। भारत का राष्ट्रीय खेल दिवस होने के कारण यह दिन यूँ भी महत्वपूर्ण था।

19 मिनट तक चले इस खिताबी मुकाबले में हालांकि भाविना पटेल 0-3 से हार गई, परन्तु बावजूद इसके उन्होंने इतिहास रच दिया। भारत को टोकियो पैरालम्पिक 2020 में मेडल दिलाने वाली वह पहली खिलाड़ी बन गईं। भाविना पटेल से पहले भारत का कोई भी खिलाड़ी पैरालंपिक खेलों के इतिहास में टेबल टेनिस के क्वार्टर फाइनल से आगे का सफर तय करने में कामयाब नहीं हो पाया था।

सेनानी

वर्ष 2021-22

अंक– 12

संपादक मंडल

उप संपादक

पोलीकार्प सोरेंग

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

उप संपादक

बिनय कुमार शुक्ल

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

संरक्षक

अक्षय काला

अपर आयुक्त

प्रधान संपादक

अपर्णा घोष

सहायक निदेशक (राजभाषा)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारादि लेखकों के निजी हैं। प्रकाशित रचनाओं के लिए संबंधित लेखक/कवि ही जिम्मेदार है, संपादकगण या संपादक मंडल नहीं।

मुद्रक

भूषण स्टूडियो एंव प्रेस

पश्चिम बंगाल 743135, दूरभाष : 9331886129

ई मेल: braj.b.gupt@gmail.com

प्रकाशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय भारत सरकार

जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI, सेक्टर-III, सॉल्ट लेक, कोलकाता - 700097, पश्चिम बंगाल, दूरभाष: 033-23350052

ई-मेल: dir-bpore@esic.nic.in, ol-barrackpore.wb@esic.nic.in

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1	संदेश	मुखमीत एस. भाटिया	3
2	संदेश	एम के शर्मा	4
3	संरक्षक की कलम से	अक्षय काला	5
4	प्रधान संपादक की कलम से	अपर्णा घोष	6
5	राजभाषा कार्यान्वयन की वार्षिक (2020-2021) रिपोर्ट		7
6	निर्धारित जाँच- बिंदुओं की मदें		8
7	द्विभाषिक वाक्यांश		9
8	राजभाषा पखवाड़ा 2021 के दौरान आयोजित वाक प्रतियोगिता		10-13
9	सफल जीवन के पाँच विशिष्ट मूल मंत्र	अपर्णा घोष	14-16
10	तारीफ करूँ क्यों उसकी.....	पोलीकार्प सोरेंग	17-19
11	हमारे कलाकार	राजू दास	20
12	**राजभाषा पखवाड़ा प्रतियोगिता में पुरस्कृत लेख:** स्वाभिमान और गर्व की भाषा है हिंदी	श्रीतमा चक्रवर्ती	21-22
13	स्वाभिमान और गर्व की भाषा है हिंदी	आशुतोष मिश्र	23
14	टोकियो ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन	समर दास	24
15	मनोरंजन के आधुनिक साधन	शुभंकर मंडल	25
16	ऑनलाइन कक्षाएँ कितना फायदा कितना नुकसान	अनुश्री धारा	26-27
17	क्या हिंदी अंग्रेजी का स्थान ले सकती है : एक विचार	अर्णव बनर्जी	28-29
18	Translation Memory- कंठस्थ	संकलन- राजभाषा शाखा	30
19	इतिहास के आईने से हिंदी का भविष्य	बिनय कुमार शुक्ल	31-33
20	बढ़े चले जा रहे हैं, रुकेंगे कहाँ.....	प्रांची मिश्र	34
21	एक सवाल	सुकांत टिकादार	34
22	आत्म-खोज	रवि सुशांत पाण्डेय	35
23	कहानी - गरीब किसान	कोमल मिश्र	36
24	विज्ञान कहानी - विजया	अर्पण घोष	37-38
25	झारखंड भ्रमण एक अलग अंदाज़ में	शुभंकर मंडल	39-42
26	महिला सशक्तिकरण	मुकेश कुमार	43-45
27	कोरोना	आशुतोष मिश्र	46
28	बच्चों की तूलिका से		47-48
29	भारत के ओलंपिक पदक विजेता	राकेश रोशन	49
30	भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अवधी भाषा का योगदान	बिनय कुमार शुक्ल	50-52

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, सी आई जी मार्ग, नई दिल्ली-110002

सत्यमेव जयते

संदेश

मुखमीत एस. भाटिया
भा.प्र.से. महानिदेशक

कोविड 19 महामारी ने जिस प्रकार से अधिकांश कार्यक्षेत्र और जीवन को डिजिटलीकृत कर दिया है वह इस डिजिटल क्रांति का अभूतपूर्व योगदान है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम की अधिकांश सेवाएँ काफी पहले से ही डिजलीकृत हो चुकी थीं, कुछ ऐसे कार्यक्षेत्र जो इस डिजिटल क्रांति से अछूते थे, इस महामारी के काल में वे भी डिजलीकृत हो गए। इस डिजटलीकरण ने दूरियों को भी कम किया है । इस महामारी के दौर में भी राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य कर रहे अधिकारियों और कर्मचारियों ने जिस सहजता से डिजिटल उपकरणों की सहायता से राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य सुचारु रूप से जारी रखा है उसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं । हमें यह पता लगा कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर ने भी राजभाषा कार्यान्वयन का समस्त कार्य चाहे वह कार्यशाला का संचालन हो या विभागीय या नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें हो, डिजिटल माध्यम से समस्त कार्य बड़ी ही दक्षता के साथ निष्पादित किया है। उनके इस कार्य में सहयोग देने के लिए बैरकपुर के कार्यालय प्रमुख और समस्त अधिकारी गण भी साधुवाद के पात्र हैं।

बैरकपुर की गृह पत्रिका 'सेनानी' का पहला डिजिटल संस्करण काफी आकर्षक एवं रुचिकर था, आशा है यह दूसरा डिजिटल संस्करण भी विविध आयामों से ओत–प्रोत, ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर होगा।

शुभकामनाओं सहित,

(मुखमीत एस. भाटिया)

सत्यमेव जयते

संदेश

एम के शर्मा
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर से गृह पत्रिका 'सेनानी' का सतत प्रकाशन हो रहा है। इस महामारी के दौर में जबकि साधन एवं संसाधनों की काफी कमी हुई है ऐसे में भी बैरकपुर से 'डिजिटल रूप' में पत्रिका का सफल प्रकाशन होना प्रशंसनीय है। 'सेनानी' का यह डिजिटल संस्करण भारत सरकार, राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर भी प्रकाशित हुई है जो अपने आप में गर्व का विषय है। यह पुनः हर्ष की बात है इस वर्ष भी 'सेनानी' का डिजिटल प्रारूप प्रकाशित होने जा रहा है । इस प्रकार से निर्बाध गति से पत्रिका का प्रकाशन बैरकपुर में राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति समर्पण की भावना परिलक्षित करता है। उनकी यही प्रचेष्टा उनके कार्यालय में राजभाषा नीतियों के सुचारु रूप से कार्यान्वयन का द्योतक भी है। आशा है कि पिछले डिजिटल संस्करण के समान ही यह द्वितीय डिजिटल संस्करण भी रुचिकर और ज्ञानवर्धक होगा।

शुभकामनाओं सहित,

(एम के शर्मा)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट संख्या-6, सेक्टर-3, सॉल्ट लेक
कोलकाता- 700097

संरक्षक की कलम से..

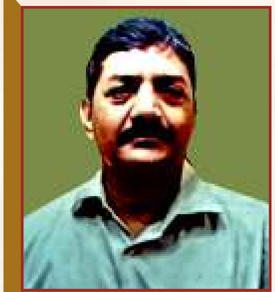

अक्षय काला
अपर आयुक्त

वर्ष 2020 के साथ ही वर्ष 2021 का भी अधिकांश समय कोरोना महामारी के कारण आशंकाओं का समय रहा है। महामारी ने लोगों के मनोबल के साथ ही सामाजिक संबंधों को भी हाशिये पर ला खड़ा कर दिया। पर इतना सब होने के बावजूद जीवन चक्र तो चलता ही रहता है। कहा जाता है कि हर बुराई की गोद में कुछ-न-कुछ अच्छाई भी छिपी होती है। एक तरफ जहाँ इस महामारी ने लोगों का सामाजिक जीवन छिन्न-भिन्न किया है तो वहीं दूसरी ओर घर से रहकर कार्य करने, शिक्षा, पूजा अर्चना सहित अधिकांश कार्य डिजिटल हो गए और अब सहज रूप से इसे स्वीकारोक्ति भी प्राप्त हो चुकी है। संभव है यदि कोविड महामारी न आई होती तो डिजिटल क्रांति के हितों से जनमानस सर्वथा अनभिज्ञ ही रहते। डिजिटल क्रांति का सकारात्मक प्रभाव राजभाषा कार्यान्वयन पर भी पड़ा है और इसी क्रम में कार्यालय से लगातार दूसरे वर्ष भी गृह पत्रिका 'सेनानी' का डिजिटल प्रकाशन हो रहा है। इसका नवीनतम डिजिटल अंक आपकी सेवा में प्रस्तुत है ।

पत्रिका के इस अंक के बारे में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी ।

अक्षय काला
(अपर आयुक्त)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट संख्या-6, सेक्टर-3, सॉल्ट लेक
कोलकाता- 700097

सत्यमेव जयते

प्रधान संपादक की कलम से

अपर्णा घोष
सहायक निदेशक (राजभाषा)

राष्ट्रभाषा, राष्ट्रध्वज और पोशाक से किसी व्यक्ति के देश, समाज और परिवेश की पहचान होती है । हर देश की अपनी भाषा, अपना पोशाक और राष्ट्रध्वज है जो भीड़ में भी उस देश को अलग पहचान दिलाता है। विश्व पटल पर भारत की भी एक विशिष्ट पहचान है पर जब बात राष्ट्रभाषा की आती है तो हम वहाँ मूक हो जाते हैं। आज़ादी के इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी बहुभाषी देश में अबतक हमलोग अपनी राष्ट्रभाषा चुन नहीं पाए यह दुखद है। कतिपय कारणों से हिंदी को सरकारी कामकाज के लिए सरकारी कार्यालयों में राजभाषा का दर्जा दिया गया और समस्त मंत्रालयों और सरकारी कार्यालयों से यह अपेक्षित है कि वे हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। सिर्फ इतना ही नहीं, हिंदी के प्रशिक्षण और प्रोत्साहन के लिए भी सरकार प्रतिवर्ष लाखों रुपये खर्च कर रही है। इतना सब होने के बावजूद आज भी अधिकांश भारतीय हिंदी के स्थान पर अंग्रेज़ी को अपनी प्रतिनिधि मानते हुए अधिकांश समर्पण अंग्रेज़ी को ही करते हैं। अंग्रेज़ी की पैठ कुछ इस तरह हो गई है अधिकांश भारतीय अपनी मातृ भाषा को हाशिये पर रखने लगे हैं। माना कि सरकारी नौकरी की परीक्षा के लिए अंग्रेज़ी वैसे ही जरूरी है जैसे सामान्य ज्ञान, तर्कबुद्धि और गणित, पर कालांतर में हम इन विषयों को भी छोड़ देते हैं और खुद में अंग्रेज़ी को इतना रचा बसा लेते हैं कि पूछिये मत। यह सब हमारी भाषाई अल्पज्ञान का परिचय तो देता ही है, हमारी अपनी खुद की अस्मिता और पहचान को भी मिटा देने वाला एक प्रयास बन जाता है। शायद यह बात आज हमारे समझ में नहीं आती हो पर यदि खुले दिल से सोचा जाए तो फिर समझ में आएगा कि हम क्या पाने की आस में क्या खोते जा रहे हैं! अब भी यदि हमारी चेतना जग गई तो वह दिन दूर नहीं है जब हमें अपने साथ-साथ अपनी भाषा और बोली पर भी नाज़ होगा। भाषा के प्रसार में साहित्य का बहुत बढ़ा योगदान है। रचनाकार ही नहीं आम व्यक्ति भी जब अपनी रचना किसी पुस्तक में देखता है तो उसके मन में जो खुशी होती है उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। कार्यालयों में हिंदी की पत्रिका प्रकाशन का मूल उद्देश्य भी यही है कि व्यक्ति अपनी रचनाओं के माध्यम से भी जाना जाए। एक बार पुन: सेनानी के इस अंक के माध्यम से रचनाकारों की सृष्टि प्रस्तुत की जा रही है। इन रचनाकारों की रचनाओं पर आपकी टिप्पणी और आपके विचारों की प्रतीक्षा रहेगी।

अपर्णा

अपर्णा घोष
सहायक निदेशक (राजभाषा)

राजभाषा कार्यान्वयन की वार्षिक (2020-2021) रिपोर्ट

1. शाखाओं एवं शाखा कार्यालयों में राजभाषा के सफल कार्यान्वयन हेतु एवं हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन पुरस्कार आदि से संबंधित परिपत्र जारी किया गया।
2. विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 04 तिमाही बैठकें आयोजित की गईं जिनमें समीक्षा, कार्यान्वयन, प्रशिक्षण के लिए आवश्यक उपाए किए गए।
3. राजभाषा शाखा का नियंत्रण एवं नेमी कार्यों का निपटान कराया गया।
4. उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की सभी शाखाओं एवं मुख्यालय से प्राप्त पत्रों का अनुवाद व कंप्यूटर टाइपिंग के कार्य करवाए गए।
6. अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा शाखा का पुस्तकालय एवं वाचनालय का लाभ उठाया गया।
7. अनुवादकों द्वारा सभी शाखाओं में संपर्क कार्य किया गया एवं स्थल पर मार्ग दर्शन दिया गया।
8. इस कार्यालय द्वारा राजभाषा की 04 कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।
9. विभिन्न शाखाओं / शाखा कार्यालयों से प्राप्त मासिक/तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की गई। सेवा- पंजियों में प्रविष्टियाँ हिंदी में भी की गई। सभी रबड़ की मोहरों को द्विभाषिक रूप से तैयार करवाया गया।
10. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दो छमाही बैठकों में इस कार्यालय ने भाग लिया।
11. जाँच- बिंदुओं एवं वार्षिक कार्यक्रम तथा अन्य मार्ग- दर्शन परिपत्र सभी के ध्यान में लाए गए।
12. सभी रिपोर्टों यथा हिंदी प्रगति की तिमाही रिपोर्ट, हिंदी शिक्षण योजना की अर्ध- वार्षिक रिपोर्ट, मासिक प्रगति रिपोर्ट, बीमा आयुक्त को अर्ध सरकारी पत्र आदि का प्रेषण मुख्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता आदि को यथासमय किया गया।
13. राजभाषा गृहपत्रिका 'सेनानी' का अंक- 11 प्रकाशित किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पत्रिका को प्रोत्साहन पुरस्कार का शील्ड प्रदान किया गया। संपादक अर्थात् श्रीमती जानकी सिंह, उप निदेशक (प्रभारी राजभाषा) को विशेष शील्ड देकर सम्मानित किया गया।
14. सभी शाखाओं एवं 18 शाखा कार्यालयों का राजभाषा से संबंधित निरीक्षण किया गया।
15. इस कार्यालय के कर्मचारियों को हिंदी शिक्षण योजना के अधीन हिंदी प्रवीण/प्राज्ञ/पारंगत/ टंकण/ कंप्यूटर टंकण का प्रशिक्षण दिलाया गया।

निर्धारित जाँच- बिंदुओं की मदें

क्र. सं.	मद	उत्तरदायी
1.	राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अंतर्गत आनेवाले कागज़ात अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप में जारी करना।	हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी/ शाखा
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों/आवेदन/अपील/अभ्यावेदन का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना।	हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी/ शाखा
3.	लिफाफों पर पते हिंदी में लिखना।	सभी शाखाधिकारी/जारीकर्ता अधिकारी तथा केंद्रीय प्रेषण के अधिकारी
4.	सभी पत्रशीर्ष त्रिभाषी (बंगला, हिंदी एवं अंग्रेज़ी) रूप में तैयार/ प्रयोग करना	सभी शाखाधिकारी/ हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी
5.	रजिस्टरों एवं सेवा-पुस्तिकाओं के शीर्ष द्विभाषी होना तथा उनमें प्रविष्टियाँ हिंदी में भी किया जाना	प्रशासन शाखा के अधिकारी/ वित्त व लेखा शाखा के अधिकारी। ।
6.	रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, साइन बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में तैयार करना।	सामान्य शाखा के अधिकारी/ संबंधित शाखा के अधिकारी।
7.	'क' तथा 'ख' क्षेत्रों की राज्य सरकारों को भेजे जानेवाले पत्रादि हिंदी में जारी करना।	हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी/ संबंधित शाखा
8.	द्विभाषी (अंग्रेज़ी- हिंदी) सुविधा युक्त कंप्यूटरों की खरीद/व्यवस्था।	सामान्य शाखा के अधिकारी/ खरीद अधिकारी।
9.	सभी विभागीय बैठकों की कार्यसूची तथा कार्यवृत्त अनिवार्यत: द्विभाषी रूप में जारी करना तथा बैठक की कार्यवाहियाँ हिंदी भाषा में संचालित करना।	बैठक अध्यक्ष/ हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी/ संबंधित शाखा के अधिकारी/शाखाएं।
10.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों द्वारा हिंदी में कार्य निष्पादन।	राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष, सदस्य सचिव तथा सभी सदस्य
11.	सभी कंप्यूटरों में यूनिकोड सहित हिंदी का उपयुक्त सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराना तथा ई-मेल हिंदी में किया जाना।	प्रणाली शाखा के अधिकारी तथा सभी ई-मेल जारीकर्ता अधिकारी/शाखाएं।
12.	फार्मों, नियम-पुस्तकों और मुद्रित होनेवाली सामग्री के मुद्रण में द्विभाषी प्रयोग।	सामान्य शाखा के अधिकारी/ संबंधित शाखा के अधिकारी/शाखाएं।
13.	विज्ञापन पर खर्च की जानेवाली कुल राशि में से न्यूनतम 50% राशि का व्यय अनिवार्यत: हिंदी विज्ञापनों पर किया जाना।	जनसंपर्क शाखाधिकारी
14.	केंद्र सरकार द्वारा जारी निदेशों के अनुपालन के संबंध में प्रशासनिक प्रधान का उत्तरदायित्व	कार्यालय अध्यक्ष
15.	उपस्थिति पंजिका में कार्मिकों के नाम तथा हस्ताक्षर हिंदी में होना।	सभी शाखाधिकारी/सभी कार्मिक

द्विभाषिक वाक्यांश

क्र. सं.	अंग्रेज़ी वाक्यांश/ शब्द	हिंदी वाक्यांश/ शब्द
1.	according to convenience	सुविधानुसार
2.	acknowledgement has already been sent.	पावती भेजी जा चुकी है
3.	action may be taken accordingly.	तदनुसार कार्रवाई की जाए
4.	assume the charge	कार्यभार ग्रहण करना
5.	agreed to	सहमति दी जाती है
6.	as directed	यथा निर्देशानुसार
7.	as modified	यथा आशोधित
8.	as recommended	यथा संस्तुत
9.	balance in hand	रोकड़ शेष
10.	by hand	दस्ती
11.	claim is time- barred	दावा कालातीत है
12.	date of issue	जारी करने की तारीख, निर्गम तारीख
13.	it has been noticed that	यह देखा गया है कि
14.	issue today	आज जारी करें
15.	please sign in hindi	कृपया हिंदी में हस्ताक्षर करें
16.	please speak.	कृपया बात करें
17.	on humanitarian ground	मानवीय आधार पर
18.	self-explanatory	स्वत: स्पष्ट
19.	action may be taken	कार्रवाई की जाए
20.	till further order	अगले आदेश तक
21.	yours faithfully	भवदीय/ भवदीया
22.	without delay	अविलंब
23.	seen and spoken	देखा और बात की
24.	pertaining to	से संबंधित
25.	bills for signature please	बिल हस्ताक्षरार्थ प्रस्तुत
26.	adhoc	तदर्थ
27.	admissible	स्वीकार्य
28.	adjustment	समायोजन
29.	advance	अग्रिम
30.	agenda	कार्यसूची

राजभाषा पखवाड़ा 2021 के दौरान आयोजित वाक प्रतियोगिता के प्रतिभागियों द्वारा अभिव्यक्त विचारों की झलकियाँ

हिंदीतर भाषी वर्ग

प्रथम वक्ता श्रीतमा चक्रवर्ती ने **'क्या हिंदी अंग्रेज़ी का विकल्प बन सकती है'** विषय पर अपना विचार रखा। उन्होंने अपने वक्तव्य में हिंदी को पारसी और संस्कृत की बेटी बताते हुए हिंदी भाषा के हर पहलू को दिखाया और बताया कि किस प्रकार से हिंदी अंग्रेज़ी का विकल्प बन सकती है। जॉर्ज ग्रियर्सन,तिलक आदि का उदाहरण और इनके कार्यों का विवरण देते हुए अंत में उन्होंने मृणालिनी घुले की कविता की दो पंक्तियों के साथ अपनी बात समाप्त की।

"यूं तो देश में कई भाषाएं और हैं,
पर राष्ट्र के माथे की बिंदी, है ये हिन्दी, है ये हिन्दी।"

दूसरी वक्ता अनुश्री धारा ने **'ऑनलाइन कक्षाएँ कितना फायदा-कितना नुकसान'** विषय पर अपना मत रखा। उन्होंने ऑनलाइन कक्षाओं के उद्भव एवं संचालन से संबंधित समस्त गूढ़ बातें बताया। उन्होंने यह भी बताया कि इसका प्रयोग कई सालों से हो रहा है। इसकी उपयोगिता की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि विभिन्न राज्यों में विद्यार्थियों को ऑनलाइन पढ़ाने के लिए किस प्रकार से अथक प्रयास किया जा रहा है। राजस्थान का उन्होंने उदाहरण देकर बताया कि वहाँ व्हाट्सप्प के माध्यम से छात्रों को नोट देकर पढ़ाया जा रहा है तो पश्चिम बंगाल में सरकार द्वारा विद्यार्थियों को टैबलेट उपलब्ध करवा गया है।

स्वागता भट्टाचार्य ने भी **'ऑनलाइन कक्षाएँ कितना फायदा-कितना नुकसान'** विषय पर अपना मन्तव्य रखा। उन्होंने वैदिक काल की शिक्षा व्यवस्था(गुरुकुल) का उदाहरण देते हुए डिजिटल क्रांति तक पहुँची शिक्षा व्यवस्था के विकास की बात बताई। उन्होंने डिजिटल शिक्षा के फायदे गिनाते हुए बताया कि ऑनलाइन शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ है कि आप शिक्षक द्वारा दिए गए व्याख्यान को रिकॉर्ड कर रख सकते हैं और आवश्यकतानुरूप इस पुनः सुन सकते हैं। अपनी बात पर और भी बल देते हुए उन्होंने दो व्यक्त की रोटी की समस्या से लेकर आगे बढ़ने की चाहत में प्रतियोगिता की भावना जागृत करने की बात कही और अंत में इसकी कुछ खामियों की चर्चा करते हुए यह कहा कि इसे सबके लिए सुगम्य बनाने के लिए इसकी खामियों को दूर करने का प्रयास भी किया जाना चाहिए।

श्याम प्रसाद सेन ने **'मनोरंजन के आधुनिक साधन'** विषय पर अपनी बात रखी। उन्होंने मनोरंजन की परिभाषा से प्रारंभ कर मनोरंजन की आवश्यकता की बात बताते हुए मनोरंजन के बदलते साधन की बात कही। उन्होंने एक उदाहरण के माध्यम से बताया कि जब लोग टेलीविजन आदि के बारे में नहीं जानते थे उन दिनों मनुष्य का ध्यान प्रकृति और जानवरों के इर्द-गिर्द रहा करता था तथा उसमे मनोरंजन के यही साधन भी थे। बाद में आगे चलकर किताबों और फिर सिनेमा से होते हुए मनोरंजन की यात्रा आज सोशल मीडिया के विविध स्वरूप में आकर सिमट गई है। उन्होंने यह बताते हुए अपनी बात समाप्त की कि मनोरंजन भी एक गोली की तरह है जो केवल मन प्रफुल्लित करने के लिए होना चाहिए इसका अधिक उपयोग या दुरुपयोग फिर पतन का कारण भी बन सकता है।

समर दास ने **'टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन'** विषय पर अपनी बात रखी। उन्होंने ओलंपिक के 100 वर्षों के इतिहास की जानकारी देते हुए इस बार के ओलंपिक पर 'कोरोना महामारी' की काली छाया की बात कहते हुए बताया कि किस प्रकार सी इस महामारी ने वैश्विक खेल के इस आयोजन को प्रभावित किया है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी ओलंपिक का एक नया थीम था। इसे इस बार हरित ओलंपिक के रूप में मनाया गया। ओलंपिक खेलों के विविध पहलुओं की चर्चा करते हुए उन्होंने भारत के अबतक के प्रदर्शन पर विस्तार से बताया।

हिंदी भाषी वर्ग

पहले वक्ता शहजाद निज़ाम ने **'टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन'** विषय पर अपनी बात रखी। उन्होंने ओलंपिक के इतिहास में विविध खेलों में भारत के प्रदर्शन की बात करते हुए वर्तमान ओलंपिक खेलों में भारत के खिलाड़ियों और उन्हें प्राप्त पदकों के बारे में

जानकारी दी।

अप्पू कुमार ने **'स्वाभिमान और गर्व की भाषा है हिंदी'** विषय पर अपना विचार रखा। उन्होंने हिंदी भाषा के विविध पहलुओं पर चर्चा करने के साथ ही वैश्विक पटल पर हिंदी की उपस्थिति के बारे में जानकारी दी। उन्होंने सन 1977 में सुरक्षा परिषद में श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी द्वारा हिंदी भाषा में अपना वक्तव्य देने संबंधित जानकारी भी साझा किया।

रवि सुशांत पाण्डेय ने **'विश्व में बढ़ती हिंसा'** विषय पर अपना विचार रखा। उन्होंने हिंसा के कारणों की विवेचना करते हुए यह बताया कि कैसे ताकतवर देश कमज़ोर देशों पर आधिपत्य जमाने के लिए हिंसा का सहारा लेते हैं। इसके लिए उन्होंने इतिहास की कुछ घटनाओं का भी जिक्र किया और फिर वर्तमान अफगानिस्तान में हो रहे उथल-पुथल को इस विषय से जोड़ते हुए अपनी बात को आगे बढ़ाया। समापन में उन्होंने महात्मा गांधी के अहिंसा आंदोलन का उदाहरण देते हुए अहिंसा से सबको जीतने की बात कही और अहिंसा का पालन कर हिंसा पर जीत का मूलमंत्र बताया।

आशुतोष मिश्र ने **'क्या हिंदी अंग्रेज़ी का विकल्प बन सकती है'** विषय पर अपना विचार रखा। उन्होंने वैश्विक स्तर पर हिंदी की उपस्थिति का विवरण देते हुए यह बताया कि किस प्रकार से अमेरिका के लोग भी हिंदी को एक भाषा के रूप में सीख और पढ़ रहे हैं तथा वहाँ के विश्वविद्यालय में हिंदी के विविध साहित्य पर शोध कार्य चल रहा है। उन्होंने एक सर्वेक्षण का हवाला देते हुए बताया कि आज वैश्विक स्तर पर अधिकतम बोले जाने वाली भाषा में हिंदी का तीसरा स्थान है। अपनी बात भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी एक कविता के कुछ अंश से समाप्त की।

अजित साव ने **'ऑनलाइन कक्षाएँ कितना फायदा-कितना नुकसान'** विषय पर अपना मत रखा। उन्होंने पढ़ाई के विशिष्ट साधन के रूप में डिजिटल व्यवस्था की जानकारी साझा करते हुए इसके विविध पहलू, उपकरण और इसके फायदे और नुकसान का जिक्र किया। अंत में उन्होंने इस संसाधन का दोहन और दुरुपयोग न हो इसके लिए सावधान रहने की जरूरत पर बल दिया तथा आत्ममूल्यांकन करने की बात कही।

भीमसेन कुमार ने **'स्वाभिमान और गर्व की भाषा है हिंदी'** विषय पर अपना विचार रखते हुए इसे सीखने की सुगमता और सरलता का विवरण दिया। अपने संदर्भ में उन्होंने कविगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर जी के हिंदी प्रेम की बात बताई। उन्होंने बताया कि ऐसे नेतागण भी प्रशंसा के पात्र है जो विदेश जाने पर अपनी ही भाषा में संभाषण देते हैं। आमिर खुसरो, निराला, प्रेमचंद आदि का उदाहरण देते हुए भारत के वर्तमान राष्ट्रपति द्वारा हिंदी के बारे में कहे सुविचार भी साझा किया। उन्होंने हिंदी को भारत के विविध भाषाई वर्गों के बीच भाषा सेतु बताया।

“सेनानी” के प्रथम डिजिटल संस्करण का लोकार्पण नराकास(उपक्रम) सदस्य गण तथा राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता के उप निदेशक श्री निर्मल दुबे जी के करकमलों से

राजभाषा पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस की झलकियां

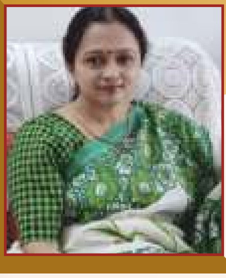

अपर्णा घोष
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सफल जीवन के पाँच विशिष्ट मूल मंत्र

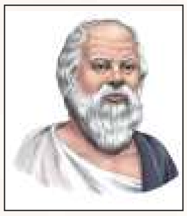

(सुकरात)

1 सफलता की कुंजी

'बिना मेहनत किए सफलता पाने की कोशिश करना
जैसे बिना बोए कटाई करने का प्रयास करना है"

(डेविड ब्लाई)

एक नौजवान को सफलता का राज़ जानना था और यह सवाल उन्होंने सुकरात से पूछा। सुकरात ने उस नौजवान को अगले दिन सुबह नदी किनारे मिलने को कहा। अगले दिन जब वे मिले सुकरात ने उस नौजवान को लेकर नदी के अंदर चलना शुरू किया। जब पानी उनकी गर्दन तक पहुँच गया तब सुकरात ने अचानक उस नौजवान की गर्दन पकड़कर पानी में डूबो दिया और उसी तरह उसे पकड़े रखा। नौजवान सांस लेने के लिए काफी संघर्ष करता रहा परंतु सुकरात उसकी गर्दन को मज़बूती से पकड़े रखा था और उसे पानी से बाहर निकलने नहीं दे रहा था। अंत में जब नौजवान में और संघर्ष करने की शक्ति नहीं बची तब सुकरात ने उसके सिर को पानी से बाहर निकाला। तब जाकर नौजवान सांस ले पाया। सुकरात ने उस नौजवान से कहा: " यह सफलता का राज़ है। इसे सफलता की कुंजी कहते हैं। तुम सफलता तभी पा सकते हो जब तुम उसे उतनी बुरी तरह से चाहोगे जैसे कि तुम कुछ क्षण पहले ज़िन्दा रहने के लिए वायु चाह रहे थे"।

ज्वलंत इच्छा सभी उपलब्धियों की प्रारंभिक बिंदु है। जैसे छोटी से चिंगारी ताप नहीं दे सकती उसी प्रकार कमज़ोर ईच्छा बेहतरीन नतीज़ा नहीं दे सकती।

2 नि:स्वार्थ सेवा का पुरस्कार

'ज़िन्दगी का अहम सवाल: आप दूसरों के लिए क्या कर रहे हैं?"

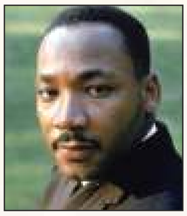

(मार्टिन लूथर किंग, जूनियर)

सालों पहले हॉलैन्ड में मछुवारों के गाँव के पास सागर में एक नाव डूब गई थी। स्वयंसेवी बचाव दल ने तुरंत अपना काम शुरू कर दिया था। गाँववाले सागर तट पर लाल टेन लेकर बेचैनी से डूबनेवाले अपने नाते-रिश्तेदारों की प्रतीक्षा करने लगे। एक घंटे बाद स्वयंसेवी बचाव दल का नाव डूबनेवाले नाव यात्रियों के लेकर कोहरे को चीरता हुआ सागर तट पर पहुँचा। गाँववाले हर्षोन्माद में उनका स्वागत करने के लिए दौड़ पड़े। बचाव दल ने घोषणा की कि उन्हें एक डूबनेवाले यात्री को पीछे छोड़कर आना पड़ा क्योंकि उनके नाव में और अधिक यात्रियों के लिए जगह नहीं थी। नाव के कप्तान ने ऐलान किया कि कोई स्वयंसेवी आगे बढ़कर आएं और उस अकेले डूबनेवाले यात्री को बचाकर ले आएं। केवल सोलह वर्षीय हैन्स आगे आया। उसकी माँ ने उसकी बांह पकड़कर उसे रोकते हुए मिन्नत की, "बेटा मत जाओ। तुम्हारे पिता की मौत दस साल पहले जहाज़ डूबने से हुई थी और तुम्हारा बड़ा भाई पॉल तीन सप्ताह पहले सागर में खो गया है। हैन्स! तुम्हारे सिवा मेरा अब और कोई नहीं है"।

पर हैन्स दृढ़ निश्चित था। वह अपनी माँ के माथे को चूमता हुआ स्वयंसेवी दल के साथ निकल पड़ा और रात के घने अंधेरे में खो गया। एक घंटे बाद बचाव दल का नाव रात के कोहरे को चीरता हुआ प्रकट हुआ। नाव पर हैन्स हर्षित नज़र आ रहा था। कप्तान ने उससे पूछा, "क्या खोया हुआ यात्री मिला"? हैन्स ने उत्तेजित होकर जवाब दिया, "हाँ, हमने उसे बचा लिया है। मेरी माँ से कहना, वह मेरा बड़ा भाई पॉल है।"

दूसरों की सेवा करने का कोई भी मौका छोड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि आपको नहीं पता कि आपकी सेवा का आपको कैसा पुरस्कार मिले!

3 जैसा बोओगे, वैसा काटोगे

'हम जैसा बोते हैं, वैसा पाते हैं। हम अपनी किस्मत खुद बनाते हैं।
हम अपने ही भाग्य के निर्माता हैं।"

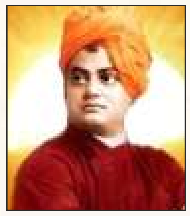

(स्वामी विवेकानंद)

बहुत साल पहले एक बहुत ही गरीब भिखारी था। फटे- पुराने कपड़ों से अपना तन ढकता था। अक्सर भूखा रह जाता था। कुछ दयालु व्यक्ति उसे कभी- कभार चावल के दाने या तांबे के सिक्के दे दिया करते थे।

एक दिन उसे पता चला कि उस राज्य का राजा रथ पर सवार होकर उस तरफ आ रहे हैं। भिखारी के मन में आशा जागी कि राजा अवश्य ही सबको कुछ न कुछ भेंट स्वरूप देंगे। वह राजा की प्रतीक्षा में सड़के के किनारे खड़ा हो गया।

राजा के पधारने पर उस भिखारी ने उनसे सहायतार्थ भीख मांगा। उसे कुछ देने के बजाय राजा ने उस भिखारी के सामने हाथ फैलाया और उन्हें कुछ देने के लिए कहा। भिखारी राजा के रवैये से बहुत दुखी हुआ। उसने हताश होकर अपनी भीख की कटोरे से चावल का तीन दाने निकालकर गुस्से से राजा के हतेली पर रख दिया।

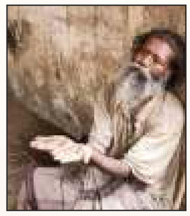

राजा उसके बदले उसके कटोरे में कुछ डालकर आगे बढ़ गए।

भिखारी ने उत्सुकता से अपना कटोरा देखा। चावल के दानों के बीच उसे तीन सोने का दाना नज़र आया। तब जाकर उसे सच्चाई का पता चला। राजा ने उसे उसके तीन दाना चावल के बदले तीन सोने का दाना दिया था। उसे अफसोस हुआ, "कितना बड़ा मुर्ख हूँ मैं, यदि मुझे पहले मालुम होता को मैं उन्हें चावल के तीन दाने देने के बजाय चावल का पूरा कटोरा दे देता।"

जितना दोगे उतना ही पाओगे। बिना कुछ दिए कुछ नहीं मिलता। यह केवल आध्यात्मिक जीवन में ही नहीं बल्कि भौतिक जीवन में भी प्रयोज्य है। अपनी भावनाओं और कर्मों में हम जैसा बोते हैं, ठीक वैसा ही हम पाते हैं। बुरी भावनाओं, बुरे कार्य से परिणाम भी बुरा ही होता है।

4 मृत्यु अवश्यंभावी है

'ऐसा नहीं कि मुझे मरने से डर लगता है।
बस जब मौत आए तब
मैं उसे महसूस नहीं करना चाहता हूँ।"

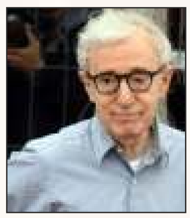

(वूडी ऐलन)

एकबार बगदाद का एक राजकुमार अपने देह रक्षक के साथ बगीचे में टहल रहा था। अचानक मौत वहाँ प्रकट होकर देह रक्षक को अचरज भरी नज़रों से देखती है। देह रक्षक को लगता है कि मौत उसे लेने आई है। इसलिए वह अपने मालिक से तेज़ गति से दौड़नेवाला घोड़ा मांगकर अपनी मातृभूमि तेहरान भाग जाता है।

राजकुमार जब अपने महल में लौट आता है तब मौत एकबार फिर उसके सामने प्रक्रट होती है। राजकुमार उससे पूछता है कि उसने उसके देह रक्षक को क्यों डराया? तब मौत जवाब देती है, "मैंने उसे नहीं डराया है, दरअसल मझे तो आश्चर्य हुआ था उसे यहाँ देखकर, क्यों कि मुझे उम्मीद थी कि वह तेहरान में है।" उस रात देह रक्षक की मौत तेहरान में हो जाती है।

हम जीवन से जुड़ी मृत्यु, पीड़ा और कठिन परिश्रम से भाग नहीं सकते हैं। यदि हम भाग भी गए तो भी वे हम तक पहुँच ही जाएंगे।

5 ईश्वर का अस्तित्व

‘जब भी मैं इश्वर के बारे में सोचता हूँ,
मेरा दिल खिल उठता है।
चूँकि उन्होंने मुझे प्रसन्न चित्त बनाया है
मैं उनकी सेवा भी खुश मिज़ाजी से करता हूँ।”

(फ्रान्ज़ जोसफ हेडन)

एकबार एक फारसी नास्तिक वैज्ञानिक उत्तरी अफ्रीका जा रहे थे। एक कंजड़ लड़का उनके साथ सफर कर रहा था। उन्होंने उस बालक से कहा, “किसी को भी ईश्वर के अस्तित्व के बारे में नहीं पता है।” उस लड़के ने सामने विस्तृत बालू पर पड़े पदचिह्न की ओर इशारा करते हुए कहा, “जब मैंने इन पदचिह्नों को देखा, मैं जान गया था कि कोई इंसान इस मार्ग से गया है। केवल कोई इंसान ही ऐसा पदचिह्न छोड़ सकता है।” फिर उसने आसमान में डूबते हुए सूरज को दिखाकर कहा, “जब मैं सूरज, बादल, सितारे और इस संसार की सभी बेहतरीन चीज़ों को देखता हूँ, मुझे यकीन हो जाता है कि विधाता ज़रूर इस मार्ग से गुज़रे होंगे। ये सभी ईश्वर के ही पदचिह्न हैं।

संपूर्ण संसार और उसका हर एक उपादान ईश्वर की अनन्य देन है। पूरा विश्व और उसकी सभी रचनाएं ईश्वर की उपस्थिति की साक्षी है।

हमारी सबसे बड़ी पराजय

अंग्रेज़ी भाषा ने संस्कृत का सर्वाधिकार छीन लिया है। आज भारतीय विद्याओं की जैसी विवेचना और विचार अंग्रेज़ी भाषा में है उसकी आधी चर्चा का भी दावा कोई भारतीय भाषा नहीं कर सकती। यह हमारी सबसे बड़ी पराजय है। राजनीतिक सत्ता के छिन जाने से हम उतने नतमस्तक नही हैं जितने कि अपने विचार की, तर्क की, दर्शन की, अध्यात्म की और सर्वस्व की भाषा छिन जाने से अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हम अपनी ही विद्या को अपनी बोली में न कह सकने के उपहासास्पद अपराधी हैं।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

तारीफ करूँ क्यों उसकी.....

पोलीकार्प सोरेंग

प्रशंसा या तारीफ किसे अच्छा नहीं लगता। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो अपनी तारीफ या प्रशंसा के दो बोल सुनना पसंद नहीं करता हो। जब हमें अपनी तारीफ सुनना पसंद है तो आवश्य ही हम भी दूसरों की उनके अच्छे कार्य या व्यवहार के लिए जरूर तारीफ करते होंगे। आपके जीवन यात्रा में ऐसे कई अवसर आए होंगे जब आपने अपनों की या दूसरों की तारीफ की होगी या दूसरे भी आपके अच्छे कार्य के लिए आपकी तारीफ किए होंगे। कई बार हम किसी के द्वारा किए गए अच्छे कार्य के लिए उन्हें धन्यवाद देना या उनकी प्रशंसा करना भूल जाते हैं या उसकी जरूरत महसूस नहीं करते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसा अक्सर हम घर पर बने स्वादिष्ट व्यंजन के लिए बनाने वाले की तारीफ नहीं करते हैं। हम स्वदिष्ट भोजन का तो भरपूर आनंद ले लेते हैं और ठूस-ठूस कर खाते हैं और डकार मार कर उठ जाते हैं किंतु भोजन की प्रशंसा करना जरूरी नहीं समझते हैं। पर यह मानव का एक स्वाभाविक गुण है। हम जिन्हें प्यार करते हैं, अपना समझते हैं, उनकी तारीफ करना शायद जरूरी नहीं समझते हैं। हमें यही लगता है कि वे तो जानते ही हैं। हाँ, वे जरूर जानते होंगे लेकिन इसे कहकर जताना भी जरूरी होता है।

आप किसी के गुणों की प्रशंसा करना कितना जरुरी समझते हैं?

यदि आप नास्तिक नहीं हैं तो अवश्य ही भगवान के दरबार में हाजिरी लगाते होंगे या घर पर अथवा अन्यत्र कहीं भगवान से विनती-प्रार्थना जरूर करते होंगे। भगवान की आरती, पूजा, आराधना आदि पूजा करने के जितने भी विधि हैं वो सब करते ही होंगे। कभी जोर-जोर से तो कभी बुदबुदाकर या मन ही मन लेकिन करते जरूर होंगे। ऐसा क्यों? भगवान तो अंतर्यामी हैं। हमारे मन की हर बात जानते हैं, फिर भी अपनी श्रद्धा और भक्ति जताने के लिए भगवान का गुणगान करना, उसकी स्तुति-आराधना करना, उन्हें अपनी इच्छाएँ एवं आवश्यकताएँ बताना अत्यंत जरूरी हो जाता है। इसलिए यह जरूरी है कि आप अपनी श्रद्धा, प्रेम, भक्ति और प्रसंशा समय समय पर उनके प्रति जाहिर करते रहे जिनके प्रति आपकी श्रद्धा है, जिन्हें आप प्रेम करते हैं, जिनकी भक्ति में आप परमात्मा को ढूँढते हैं, जिनको आपकी प्रशंसा एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता है और जो प्रसंशा के योग्य दिखे।

भोजन में स्वाद भरपूर हो या आपकी मनपसंद खाद्य सामग्री बनाई गई है, तो प्रशंसा के साथ धन्यवाद तो देना बनता ही है। कितनी मेहनत से बनाया गया होता है। विभिन्न अवसरों पर कभी बाहर घूमने जाने के लिए या किसी पार्टी में जाने के लिए धर्मपत्नी आपके लिये सज-धज कर तैयार होती है। कितनी मेहनत लगती है सजने-सवरने में। तारीफ के साथ प्यार जताना तो बनता ही है।

माँ-बाप ने कितनी मेहनत एवं प्यार से आपका लालन-पालन कर इतना बड़ा किया। अच्छी शिक्षा दिलाई, अच्छे संस्कार दिए, अच्छा भोजन उपलब्ध कराया, अच्छे कपड़े दिलाए, आपकी जरुरत की वो सब चीज़ें दिया जो वे दे सकते थे। जब कभी भी आप बीमार पड़े तो उन्होंने निस्वार्थ भाव से आपकी सेवा की। जब आप दुखी हुए तो वे भी आपके दुख के भागी हुए और आपको मुस्कुराता देख वे भी मुस्कुराए। जब भी आप घर से बाहर जाते हैं तो वे बेसब्री से आपके सकुशल घर वापस आने का इंतजार करते हैं। वे आपको प्रेम करते हैं और आप भी उन्हें दिलो-जान से प्यार करते हैं। इस बात का उन्हें एहसास भी है कि आप उन्हे बहुत प्यार करते हैं। लेकिन कभी-कभी जब भी कुछ अवसर मिले उनकी तारीफ करना, उन्हें धन्यवाद कहकर उनके प्रति अपना प्यार जताना भी जरूरी होता है। अब तो फादर्स डे, मदर्स डे आदि कई सारे ऐसे अवसर आते हैं जब हम उनके प्रति अपनी श्रद्धा-भक्ति और प्यार जता सकते हैं।

आप किसी की अच्छाई की प्रशंसा करते हैं तो उस व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

जब कभी भी मौका मिले और जहाँ जरा सा भी गुंजाइश हो तो सामने वाले व्यक्ति की तारीफ जरूर करनी चाहिए। हालांकि हर समय

प्रशंसा करना संभव भी नहीं है। किंतु निंदा से तो प्रशंसा ही अच्छा है। इसलिए बुराई को नजरअंदाज कर उसमें विद्यमान अच्छाईयों की प्रशंसा किया जा सकता है। हाँ लेकिन झूठी प्रशंसा या तारीफ बिलकुल भी नहीं करनी चाहिए। तारीफ करने से एक-दूसरे के प्रति प्यार बढ़ता है, आदर-सम्मान बढ़ता है तथा वातावरण एवं व्यवहार बिलकुल सकारात्मक हो जाता है। अपने अच्छे कार्य की प्रशंसा सुनकर इंसान खुश हो जाता है। अच्छे कार्य की जब प्रशंसा होती है तो उस व्यक्ति को प्रोत्साहन मिलता है कि कुछ और अच्छा किया जाए, इससे बेहतर किया जाए। यहीं से उनमें सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इसे हम सकारात्मक प्रबलन कह सकते हैं। किसी की निंदा करना बहुत ही सरल है लेकिन तारीफ करना थोड़ा मुश्किल काम लगता है। यह हिम्मत का काम है। अगर आपको किसी व्यक्ति की तारीफ करनी हो तो उनके संपूर्ण व्यक्तित्व मे से उनकी अच्छाइयाँ खोजनी होगी। किसी के अच्छे गुणों की प्रशंसा तो होनी ही चाहिए चाहे वह विरोधी या दुश्मन ही क्यों न हो। दुश्मन के गुणों की सराहना करते हुए स्वयं उन गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न भी करना चाहिए। रावण के कुशाग्र बुद्धिमता होने के गुणों की लोग आज भी प्रशंसा करते हैं। कभी-कभी किसी दुश्मन या विरोधी की तारीफ करने से आपस की शत्रुता भी मिट जाती है। प्रशंसा करने वाले इंसान को लोग पसंद भी करते हैं, उनकी कद्र करते हैं और वह व्यक्ति लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाता है, सबका चहेता बन जाता है।

छोटे बच्चों को जब उनके अच्छे कार्य, अच्छे व्यवहार अथवा उनमें निहित कुछ खास गुणों के लिए प्रशंसा मिलती है तो वे उनसे प्रेरित होते हैं और धीरे-धीरे वे उन्हीं सदगुणों को अपनाने लगते हैं और जैस-जैसे वे अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं उन सदगुणों का विकास और विस्तार होता जाता है। बच्चे अपने माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी, नाना-नानी, आस-पड़ोस, समाज, परिवेश आदि से ही अपने अंदर गुणों का विकास करते हैं। इसलिए लोग अच्छे और संस्कारी बच्चों को देखकर अक्सर कहते हैं कि बच्चा इतना अच्छा है तो माँ-बाप कितने अच्छे होंगे। अगर बच्चा कुछ बिगड़ैल किस्म का है तो भी लोग कहते हैं कि बेटा ऐसा है तो पता नहीं माँ-बाप कैसा होंगे।

हो सकता है आपका बेटा या बेटी पढ़ने में थोड़ा कमजोर हो लेकिन मेहनती बहुत है तो उसके मेहनती होने की प्रशंसा करनी चाहिए। हो सकता है आपकी प्रशंसा पाकर वह और अधिक मेहनत करेगा और अविश्वासनीय परिणाम लेकर आए। ऐसा भी होता है कि आपका बेटा या बेटी बहुत ही मेघावी है, उनका दिमाग बहुत तेज दौड़ता है लेकिन वह पढ़ाई के प्रति बिलकुल बेपरवाह रहता है, पढ़ाई-लिखाई में उनका मन नहीं लगता है। केवल खेल या अन्य चीजों में समय बर्बाद करता है। ऐसे छात्रों को उनके कुशाग्र बुद्धिमता की प्रशंसा करनी चाहिए। हो सकता है आपकी तारीफ का असर उस पर पड़े और वह पढ़ाई में भी रूचि लेने लगे। इस तरह वह समय रहते अपना भविष्य उज्जवल बना सकता है।

'ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोए।
औरन को सीतल करे, आपहुं सीतल होए।।"

प्रशंसा में वह शक्ति है जो अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्ति को भी सही राह पर चलना सीखा देता है। इसके लिए उपेक्षित जीवन जीने वाले व्यक्ति की प्रशंसा के साथ-साथ उनका मार्गदर्शन, सहारे औऱ अच्छी शिक्षा की भी आवश्यकता होती है। किसी इंसान में कुछ भी अच्छा न दिखे तो भी अगर वह अच्छे नीयत वाला है तो उसके अच्छे नीयत की प्रशंसा होनी चाहिए। बहुत से लोग ईर्ष्या और अहंकारवश दूसरों के गुणों की प्रशंसा नहीं करते हैं।

अच्छे व पात्र व्यक्ति की प्रशंसा करने से उनके अंदर सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। अहंकारी या अपात्र व्यक्ति की प्रशंसा करने से उनके अंदर घमंड आ जाता है। इसलिए सोच-समझकर ही प्रशंसा करनी चाहिए। कुछ लोग गलत नीयत से दूसरे की प्रशंसा करते हैं ताकि अपना उल्लू सीधा कर सकें। इसे हम प्रशंसा नहीं बल्कि चपलूसी या चमचागिरी करना कहते हैं। ऐसे लोगों से सचेत रहने की आवश्यकता है।

मीठी आवाज सुनना किसे पसंद नहीं है। मीठी आवाज चाहे पशु-पक्षियों की हो, वाद्य-यंत्रों की हो, संगीत की हो, अपने बच्चों की हो, मित्र-बंधुओं की हो या जीवन साथी की हो, लोग सुनना पसंद करते हैं। जीवनसाथी की आवाज में मिठास पाने वाले लोग अब शायद कम ही होंगे, लेकिन फिर भी वाणी की मिठास आज भी कायम है। सबसे मीठी आवाज लगती है अपनी प्रशंसा या अपने प्रशंसक की। यह सत्य है कि

दैनिक जीवन में अनेक ऐसे लोग मिलते हैं, जिनके द्वारा की गई प्रशंसा हमारी ऊर्जा और उत्साह को बनाए रखने में हमारी सहायता करती है। जब कोई हमारी तारीफ में दो शब्द कहता है तो हमारे व्यक्तित्व में मिठास घुलने लगती है। प्रशंसा की यह मिठास कानों से होते हुए हृदय में घुल जाती है। प्रशंसा हमें अच्छे कर्म के लिए प्रेरित करती है। यह हमें अहंकारी भी बना सकती है। प्रशंसा को धीर-गंभीर लोग तुरंत पचा लेते हैं और किसी अच्छे कर्म के लिए प्रेरित होते हैं। प्रशंसा प्रेरणा बन जाती है। मूर्ख प्रशंसा सुनकर अहंकार पाल लेता है। कुछ लोग सहज प्रवृति के होते हैं जो किसी के द्वारा की गई प्रशंसा को सहजता से ग्रहण करते हैं और भूल जाते हैं। सबसे अच्छा तरीका यही लगता है। अंत में हमारे द्वारा की गई प्रशंसा लौटकर हमारे पास ही आ जाती है। इसमें कोई मेहनत नही लगती लेकिन इसका फायदा बड़ा लाजवाब होता है। रिश्तों में बिना चीनी घोले शक्कर के मिठास का अहसास होता है। आप भी आज़मा कर देख लीजिए।

शिक्षण एक बहुत ही महान पेशा है जो किसी व्यक्ति के चरित्र, क्षमता और भविष्य को आकार देता है। अगर लोग मुझे एक अच्छे शिक्षक के रूप में याद रखते हैं, तो मेरे लिए ये सबसे बड़ा सम्मान होगा।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

हमारे कलाकार

(मुखपृष्ठ के पेंटिंग)

राजू दास

राजभाषा शाखा के विशेष आग्रह पर श्री राजू दास जी ने पत्रिका के मुखपृष्ठ की पेंटिंग तैयार की। इसे तैयार करने के लिए सन 2020 के ओलंपिक में कर्मचारी राज्य बीमा निगम के अधिकारियों द्वारा किये गये प्रतिनिधित्व और विजय गाथा का थीम चुना।

राजू जी मूल रूप से बिहार के बेगूसराय जिले से हैं। कर्मचारी राज्य बीमा निगम में सन 2018 से कार्यरत हैं तथा वर्तमान में मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय में तैनात हैं। राजू जी ने पेंटिंग की शिक्षा किसी विद्यालय में जाकर नहीं ली है। उन्हें बचपन से ही चित्रकारी का शौक था जिसे मूर्त रूप देने के लिए वे अलग अलग स्थानों पर अलग अलग चीजों को देखकर उन्हीं अपने मन में उसे बिठाते हुए उन वस्तुओं को कागज पर उतार देते थे। बचपन में ही जब भी कहीं पेंटिंग प्रतियोगिता होती थी, दोनों भाई वहाँ पहुँच जाते और प्रतियोगिता में हिस्सा लेते थे और पुरस्कार जीत कर ही लाते थे। सन 2007 से जब वे 11 वीं में थे, स्कॉटिश चर्च कॉलेज में पेंटिंग प्रतियोगिता हो रही थी। वे भी वहाँ पहुँचे, प्रतियोगिता में भाग ली और द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। उनका यह शौक क्रमशः उनकी आदत बनती चली गयी और फिर उनकी कला में निखार आता गया। इन्होंने कई चित्रकारी कार्यशालाओं में भाग लिया है। अपनी पेंटिंग के लिए इन्हें राजस्थान में पुरस्कृत भी किया गया है। हाल ही में अक्टूबर माह में स्कारलेट इंडिया ग्रुप की ओर से एक चित्रकला प्रदर्शनी आयोजित की गयी थी जिसमें इनकी पेंटिंग को पुरस्कृत भी किया गया है। इनकी पेंटिंगों को विविध प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया जा चुका है। अधिकांशतः वे स्वांतः सुखाय के लिए ही पेंटिंग करते हैं।

स्वाभिमान और गर्व की भाषा है हिंदी

श्रीतमा चक्रवर्ती

प्रस्तावना- हर देश की अपनी भाषा होती है। भाषा के माध्यम से ही हम एक-दूसरे की बातों और विचारों को समझ और समझा पाते हैं। भारत देश विभिन्न जाति, धर्मों एवं संस्कृति का देश है जहाँ कई भाषाओं और बोलियों का प्रयोग होता है। ऐसे में यदि किसी देश की अपनी एक सार्वजनीन भाषा न हो तो देश में एकता की कल्पना करना असम्भव है। इसलिए 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने भारत के संविधान के अनुच्छेद 343(1) में यह स्पष्ट उल्लेख किया है की "संघ की आधिकारिक भाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी होगी" और 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' घोषित किया गया। जिससे इस राजभाषा के धागे से सब एक साथ बंधे रहें।

हिन्दी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। "हिन्दी" शब्द फारसी भाषा का हैं। यह एक प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ-साथ विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है।

विशेषताए: हिन्दी को संस्कृत की बड़ी बेटी कहते हैं। बहुत समय पूर्व भारत में संस्कृत भाषा का प्रभाव था। बाद में धीरे-धीरे सामान्य जन-साधारण की भाषा के रूप में हिंदी भाषा प्रचलन में थी। हिन्दी का प्रमुख गुण यह है कि यह बोलने, पढ़ने, लिखने में अत्यंत सरल है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान जॉर्ज ग्रियर्सन ने कहा है कि हिन्दी व्याकरण के मोटे नियम केवल एक पोस्टकार्ड पर लिखे जा सकते हैं। संसार के किसी भी देश का व्यक्ति कुछ ही समय के प्रयत्न से हिन्दी बोलना और लिखना सीख सकता है।

इसकी दूसरी विशेषता है कि यह भाषा, लिपि के अनुसार चलती है। इसमें जैसा लिखा जाता है, वैसा ही बोला जाता है। और इसकी लिपि वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत उपयुक्त लिपि हैं। इसके अक्षर उदग्र, स्पष्ट और स्वस्थ आकार वाले हैं।

इसका तीसरा गुण है कि संसार की लगभग सभी भाषाओं के शब्द इसमें घुलमिल सकते हैं। कुर्सी, आलमारी, कमीज, बटन, स्टेशन, पेंसिल, बेंच आदि अनगिनत शब्द हैं जो विदेशी भाषाओं से आकर इसके अपने शब्द बन गए हैं।

लेकिन हिन्दी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है की हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का प्रतिबिंब है। यह स्वाधीनता आंदोलन में संपर्क भाषा थी। भारतीय स्वाधीनता का महासमर हिन्दी के माध्यम से ही लड़ा गया था। उत्तर से लेकर दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक, भारत के अधिकतर विद्वान जैसे नेताजी सुभाष चंद्र बोस, महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक ने भारत की एकता और अखंडता के लिए हिन्दी का समर्थन किया है।

और इसका साहित्य भी सुविशाल और समृद्ध है। हिन्दी साहित्य के कई प्रसिद्ध साहित्यकार हैं जिनमें महादेवी वर्मा, भारतेन्दु हरीशचन्द्र, प्रेमचन्द, अयोध्या प्रसाद उपाध्याय "हरिऔध" और भी न जाने कितने साहित्यकार हैं, जिनकी रचनाएं विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है।

बाधाएँ: इतने अधिक गुणों से भरपूर होकर भी हिन्दी आज अंग्रेज़ी के पीछे क्यों चल रही है ?

अंग्रेज़ी शासन से आज़ादी के बाद जब हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया तब भी उसे वह सम्मान न मिल पाया जिसकी कल्पना की गई थी।

आजकल जिस किसी को भी देखो वह अंग्रेज़ी भाषा या किसी अन्य भाषा को सीखने में ज्यादा उत्सुक रहता है। हम या आप जब भी किसी बड़े होटल या बिजनेस क्लास के लोगों के बीच खड़े होकर अपनी मातृभाषा का प्रयोग कर रहे होते हैं तो लोगों के दिमाग में आपकी छवि एक गंवार की बनती है या यह कह सकते हैं कि हिन्दी बोलने वालों को लोग तुच्छ नजरिए से देखते हैं।। घर पर बच्चा अतिथियों को अंग्रेज़ी में कविता आदि सुना दे तो माता-पिता गर्व महसूस करने लगते हैं। इन्हीं कारणों से लोग हिन्दी बोलने से घबराते हैं। और कोई भी व्यक्ति नहीं चाहता कि अंग्रेज़ी न आने से उसका भविष्य खराब हो। इसलिए हिंदी काम चलाने लायक आ जाए तो बहुत है पर अंग्रेज़ी अवश्य आनी चाहिए।

हम हमारे ही देश में अंग्रेज़ी के गुलाम बन बैठे हैं और हम ही अपनी हिन्दी भाषा को वह मान-सम्मान नहीं दे पा रहे हैं, जो भारत और देश की भाषा के प्रति हर देशवासियों के नजर में होना चाहिए। हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकारों के रचनायें अन्य भाषाओं में छप कर पूरे विश्व में छाई हुई हैं। हालाकि इनके अपने देश के लोग ही इन्हे भूलते जा रहे हैं। यह कतई सही नहीं है। यदि समय रहते हमने सही कदम न उठाया तो भाषा के साथ-साथ यह राष्ट्र भी कमजोर होता जाएगा और अपनी पहचान भी खोता जाएगा।

उपाय: इस प्रकार की स्थिति होने का सीधा सम्बन्ध हमारी नीतियों से है। यदि सरकार ऐसी नीति बनाए कि जिससे सभी स्थानों पर हिन्दी भाषा के प्रयोग को प्रमुखता दी जाए तो लोग अपनी राष्ट्रभाषा की ओर ज्यादा आकर्षित होंगे। विदेश में जाने के लिए जिस प्रकार अंग्रेज़ी की परीक्षा उत्तीर्ण करनी पड़ती है वैसे ही हमें भी अपने देश के नागरिकों एवं बाहर से आकर कार्य करने वालों के लिए हिन्दी भाषा की परीक्षा को उत्तीर्ण करना आवश्यक बनाना चाहिए। इस प्रकार अधिक से अधिक लोग हिन्दी भाषा को प्रयोग करने में उत्साहित होंगे। विद्यालय स्तर पर भी हमें हिन्दी भाषा के प्रयोग पर जोर देना चाहिए जिससे बच्चे बचपन से ही अन्य भाषाओं के साथ- साथ हिन्दी भाषा में पारंगत हों।

हिन्दी दिवस पर प्रत्येक विद्यालय में हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए कार्यक्रमों का आयोजन आवश्यक होना चाहिए जिसमें बच्चे बढ़चढ़ कर अपनी भागीदारी करें। पाठ्यक्रम में अन्य भाषाओं के नाटक एवं कहानियों के साथ-साथ हिंदी भाषा में भी प्रमुख साहित्यकारों के नाटक एवं कहानियाँ सम्मिलित करनी चाहिए।

राजनैतिक स्तर पर भी हिंदी में भाषण न देकर कई नेता अंग्रेज़ी में भाषण देते हैं जिसका विरोध करना चाहिए एवं हिंदी में भाषण देने पर जोर दिया जाना चाहिए।

उपसंहार- किसी भी स्वाधीन देश की सही अभिव्यक्ति उसकी अपनी भाषा में ही हो सकती है। मुंशी प्रेमचंद के अनुसार – "जिसकी कोई राष्ट्रभाषा नहीं, उसका कोई राष्ट्र भी नहीं हैं।".

हमें याद रखना चाहिए की हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी हिंदुस्तान की भाषा है और यह हिंदुस्तान को बांधती है। एक हिंदुस्तानी को कम से कम अपनी भाषा तो आनी ही चाहिए, साथ ही हमें हिन्दी का सम्मान भी करना सीखना होगा।

राजभाषा किसी भी देश की पहचान और गरिमा होती है। इसके प्रति अपना प्रेम और सम्मान प्रकट करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। अतः भारत की उन्नति के लिए आवश्यक है की हिन्दी भाषा के प्रयोग में हमें कमतर महसूस न करके इसका गर्व के साथ प्रयोग करना चाहिए एवं आने वाली पीढ़ी को भी हिंदी को अपनाने के लिए जागरुक करना चाहिए क्योंकि यह केवल एक भाषा नहीं, यह है हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की महागाथा।

"यूं तो देश में कई भाषाएं और हैं,
पर राष्ट्र के माथे की बिंदी, है ये हिन्दी, है ये हिन्दी।"

मृणालिनी घुले

स्वाभिमान और गर्व की भाषा है हिंदी

आशुतोष मिश्र

हमारी राजभाषा हिंदी न केवल हमारे देश में अपितु पूरे विश्व में बहुत तेजी से अपनाई तथा बोली जा रही है। यह हम भारतवासियों के लिए गर्व की बात है। आज विश्व के 173 विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा को भाषायी पाठ्यक्रम के रूप में अपनाया गया है। हमारी भाषा हिंदी वहाँ के अध्ययन, अध्यापन तथा शोध का मुख्य केंद्र बना हुआ है। अमेरिका जैसे शक्तिशाली तथा विकसित देश में 30 से ज्यादा विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा को भाषायी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। दक्षिण प्रशांत महासागरीय देश फिजी में तो हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। यह भाषा फिजी देश में फिजी हिंदी या फिजी हिंदुस्तानी के नाम से जानी जाती है जो भोजपुरी, अवधि तथा हिंदी का मिश्रित रूप है।

आज पूरे विश्व में 6900 मातृभाषाएँ बोली जाती है जिनमें से 35-40% भाषाएँ अपनी अस्तित्व के संकट से गुजर रही है, वहीं दूसरी तरफ हमारी मातृभाषा हिंदी का फैलाव पूरे विश्व में तेजी से हो रहा है जो हमारे देश के आत्मसम्मान तथा आत्मगौरव को बढ़ावा देने का काम करता है।

विश्व की भाषाओं का इतिहास रखने वाली संस्था 'एथ्नोलॉग' के मुताबिक हिंदी भाषा चीनी तथा अंग्रेज़ी भाषा के बाद तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। अमेरिका में तो यह भाषा सौ प्रतिशत तीव्र गति से फैल रही है। करीब 6.5 लाख लोग आज वहाँ हिंदी बोलना और लिखना पसंद करते हैं।

हमारी राजभाषा हिंदी का प्रसार विश्व के सभी महाद्वीप, चाहे वह एशिया महाद्वीप हो या अफ्रीका या अमेरिका या यूरोप या दक्षिणी प्रशांत महासागर की खाड़ी के देश हो, सभी जगहों पर समान रूप से ही रहा है। खाड़ी के देश फिजी के अलावा हिंदी का प्रयोग पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, भूटान, रूस, त्रिनिदाद, सुरीनाम, युगांडा, वुयाना, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका इत्यादि देशों में रहने वाले लोगों के द्वारा प्रचुर मात्रा में किया जा रहा है।

दिलचस्प बात यह है कि रूस के विद्वानों द्वारा हिंदी साहित्य के इतिहास पर शोध तथा अनुवाद जितना हुआ है उतना किसी अन्य ग्रंथ का नहीं हुआ है। उनकी यह दिलचस्पी हमारी राजभाषा की आन, मान तथा शान को बढ़ाती है।

विश्व आर्थिक मंच – 2017 के रिपोर्ट के मुताबिक विश्व की दस शक्तिशाली भाषा में हिंदी का नाम आता है। वैश्विक स्तर पर हिंदी की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इसी का परिणाम है कि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने वर्ष 2017 में अपने शब्दकोश में "बच्चा", "अच्छा" तथा "सूर्य नमस्कार" जैसे शब्दों को शामिल किया है। ये सभी उपलब्धियाँ न सिर्फ हिंदी की अपितु पूरे हिंदुस्तान में रहने वाले लोगों के गर्व तथा स्वाभिमान को बढ़ावा देती है।

"जिन भाषा उन्नति अहै सब उन्नति का मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय से शूल।। **भारतेंदु हरिश्चंद्र**

उपरोक्त पंक्ति से नि:संदेह हम यह समझ सकते हैं कि जब तक हमारी अपनी भाषा अर्थात् हिंदी का सम्मान हम खुद नहीं करेंगे या हिंदी भाषा को बढ़ावा हम खुद नहीं देंगे तब तक हमारे देश, समाज तथा खुद हमारा उत्थान संभव नहीं है।

हमारी मातृभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है तथा 01 सितंबर से 15 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा के रूप में मनाया जाता है। इस पाक्षिक समारोह में हिंदी भाषा से संबंधित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

10 जनवरी, 1975 को पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीया इंदिरा गांधी ने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया था जिसमें 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था। वर्ष 2006 से प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस दिन सभी प्रवासी भारतीय तथा सभी ऐसे लोग जो हिंदी बोलने में दिलचस्पी रखते हैं उनके द्वारा विश्व के कोने-कोने में हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

अंतत: हम यह कह सकते हैं कि हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है बल्कि यह इस राष्ट्र की राष्ट्रभाषा भी है और प्रत्येक देशवासियों को हिंदी बोलने में आत्मगौरव का अनुभव होता है। हमें हमारी भाषा हिंदी पर गर्व है।

समर दास

राजभाषा पखवाड़ा प्रतियोगता में पुरस्कृत लेख

टोकियो ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन

पहली बार ओलंपिक खेल की शुरुआत ग्रीस देशों में हुई थी। सन 1896 में ग्रीस में आधुनिक ओलंपिक खेलों की शुरुआत हुई थी। भारत ने 1920 में पहली बार आधिकारिक तौर पर ओलंपिक खेलों में हिस्सा लिया था। भारत इस साल अपने ओलंपिक अभियान का 100 पूरा कर लिया है, हर चार साल में एक बार इस प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है।

जापान की राजधानी टोक्यो में इस साल जुलाई-अगस्त में 32 वें ग्रीष्मकाल ओलंपिक-20 खेलों का आयोजन हुआ। वैश्विक स्तर पर इन खेलों का महत्व बहुत है। वैसे तो यह प्रतियोगिता सन 2020 में ही होने वाली थी पर कोविड महामारी के कारण आयोजन समय पर न हो सका। ओलंपिक के इस खेल प्रतियोगिता का आयोजन जापान के इहाकाम स्टेडियम में बड़े ही धूम-धाम से हुआ। प्रतियोगिता की शुरुआत दिनांक 23 जुलाई 2021 को हुई तथा 08 अगस्त 2021 को समापन हुआ।

इस बार विश्व के कुल 206 देशों के 11658 खिलाड़ियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। इन खेल प्रतियोगिताओं में कुल 33 खेल थे। इन खेलों में विश्व के बेहतरीन खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। हर बार ओलंपिक खेलों का एक नया थीं होता है। इस बार इन खेलों का थीं था 'United by Emotions' तथा इसका 'मिराई टोआ' इसका प्रतीक(मैस्काट) था। यह ओलंपिक विश्व के हरित ओलंपिक युग की शुरुआत भी बना है। इस ओलंपिक में चार नए खेल भी शामिल किए गए जो (i) बेस बॉल और सॉफ्ट बॉल (ii) कराटे (iii) स्पोर्ट्स क्लाइम्बिंग और (iv) सर्फिंग और स्टेट बोटिंग हैं।

इस बार के टोकियो ओलंपिक में भारतीय दल देशवासियों के उम्मीदों पर खरा उतरा है। खेल शुरू होने के पहले यह कहा जाता था कि इस बार भारतीय दल ओलंपिक इतिहास में अबतक का सबसे अच्छा प्रदर्शन करेगी। और ऐसा हुआ भी। भारतीय दल ने कमाल का खेल दिखाया और खुद को इतिहास के पन्नों में दर्ज करवा ही लिया। आइए कुछ रिकार्डों के बारे में जानते हैं जो भारत ने टोकियो ओलंपिक में बनाए :

1. भारत वर्ष 1900 से ओलंपिक में हिस्सा लेता रहा है। तबसे अबतक यह पहली बार हुआ है कि टीम इंडिया ने ओलंपिक में सबसे अधिक पदक जीता है। इसके पहले सन 2012 के लंदन ओलंपिक में भारत ने कुल 6 पदक अपने नाम किया था। एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य पदक।

2. भारतीय टीम ने इस बार भी कुश्ती में अच्छा प्रदर्शन किया। भारत की ओर से पहलवान रवि कुमार दाहिया ने रजत और बजरंग पुनिया ने कांस्य पदक जीता। भारत ने 8 साल बाद इस बार कुश्ती में दो पदक जीता है। इससे पहले सन 2012 के लंदन ओलंपिक में सुशील कुमार ने रजत और योगेश्वर दत्त ने कांस्य पदक जीता था।
3. इस बार भारत के पुरुष हॉकी टीम ने कांस्य पदक अपने नाम किया जो अपने आप में कीर्तिमान है। 41 वर्ष के बाद ओलंपिक में भारत ने हॉकी में कोई पदक जीता है। इससे पहले सन 1980 में भारत ने स्वर्ण पदक जीता था। उसके बाद से भारतीय टीम लगातार संघर्ष करती रही पर इस बार उन्होंने अपने प्रदर्शन से सबका दिल जीत लिया। भारतीय महिला हॉकी दल ने भी शानदार प्रदर्शन किया और सेमीफाइनल में अपनी जगह बनाई पर यह दुखद रहा कि इससे आगे न बढ़ सकी और कांस्य का मुकाबला भी हार गई। यह टीम पहली बार ओलंपिक में चौथे स्थान पर रही।
4. टोक्यो में भारत ने एक स्वर्ण पदक जीता। जैवलीन थ्रो में नीरज चोपड़ा ने यह कीर्तिमान रचा। इस तरह 13 साल बाद भारत ने ओलंपिक में सोना जीता। इससे पहले सन 2008 में अभिनव बिन्द्रा ने शूटिंग में स्वर्ण पदक जीता था। अभिनव के बाद नीरज चोपड़ा दूसरे ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्होंने व्यक्तिगत स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता है।
5. भारत ने अपने 121 साल के ओलंपिक इतिहास में पहली बार एथेलेटिक में पदक अपने नाम किया है। इससे पहले किसी भारतीय ने ट्रैक एंड फील्ड प्रतियोगिता में कभी भी कोई पदक नहीं जीता है।

राजभाषा पखवाड़ा प्रतियोगिता में पुरस्कृत लेख

मनोरंजन के आधुनिक साधन

शुभंकर मंडल

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। काम करते-करते जब वह थक जाता है, तब वह अपने मन और शरीर को आराम और सुख देने के लिए कोई न कोई सुविधा-जनक उपाय की खोज करता रहता है। इस तरह के अपनाए गए खोज से जब मन खुश हो जाता है, तब उसे मनोरंजन कहा जाता है। मनोरंजन दो शब्दों के योग से बना है- मन और रंजन। मनोरंजन का सामान्य अर्थ मन का रंजन अर्थात मन का आनंद होता है।

आज विज्ञान का युग है। विज्ञान के इस युग में मनुष्य ने अनेक नए-नए अविष्कार किए हैं। विज्ञान के द्वारा मनुष्य ने अपने जीवन की इच्छाओं एवं आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों को ढूँढ़ लिया है एवं उन्हें अपने जीवन में अपनाया है। जिस प्रकार मनुष्य ने विज्ञान में प्रगति की है उसी तरह उसने मनोरंजन के भी अनेक साधन प्राप्त कर लिए हैं।

मनोरंजन के आधुनिक साधनों में मनुष्य ने टेलीविजन, कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट आदि अनेक साधनों की खोज की है जो विज्ञान की सहायता से ही प्राप्त हुआ है। मनोरंजन के आधुनिक साधनों में टेलीविजन सबसे लोकप्रिय साधन है। टेलीविजन की सहायता से हम हजारों किलोमीटर दूर देश-विदेश की खबरों को देख और सुन सकते हैं, जिससे हमारा मनोरंजन होता है। टेलीविजन की लोकप्रियता का यह भी एक कारण है कि इससे हम अपना एवं अपने परिवार का मनोरंजन करने के साथ-साथ अपनी विभिन्न प्रकार की ज्ञान पिपासा को भी तृप्त कर सकते हैं। इससे हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है और हमारी कार्य क्षमता भी बढ़ती है।

आधुनिक मनोरंजन के साधनों में मोबाइल दूसरा सबसे लोकप्रिय साधन माना जाता है। इसकी सहायता से हम विडियो देख सकते हैं, गाना सुन सकते हैं, विडियो गेम खेल सकते हैं। इसकी सहायता से हम कहीं भी किसी से भी बात कर सकते हैं। मोबाइल का प्रयोग करना भी बहुत आसान है। समाज के हर तबके के लोग इसका प्रयोग कर रहे हैं। मोबाइल के आ जाने से आज हमें बटुए में कैश लेकर खरीदारी करने जाने की जरुरत नहीं पड़ती है। हम मोबाइल में इंटरनेट एवं ऑनलाइन वैलेट की सहायता से आसानी से पैसों का लेन-देन कर सकते हैं।

आज के आधुनिक युग में सिनेमा एवं नाटक भी मनोरंजन के साधनों में बहुत ही लोकप्रिय है। आज के इस भौतिकवादी समाज में बहु-संख्य लोगों का जीवन सिनेमा जगत के द्वारा मनोरंजन पर निर्भर है। मन मोह लेने वाली संगीत, मनोहरी नृत्य एवं कर्णप्रिय वाद्य मनोरंजन के साधनों में सर्वोपरि है।

मनोरंजन के कई अन्य साधन जैसे- लेखन, बागवानी, वस्तुसंग्रह, ताश, लूडो, हस्तशिल्प, चित्रकला आदि भी है। मनुष्य अपनी रूचि के अनुसार विभिन्न प्रकार के साधनों की मदद से अपना मनोरंजन करता है।

गाँवों में लोक-संगीत, लोक नृत्य, मेला, कवि सम्मेलन आदि बहुत ही लोकप्रिय मनोरंजन के साधन है। गाँवों में तो इन सबके सहारे बहुत से परिवारों का गुज़ारा भी हो जाता है। कोई अपनी संगीत का प्रदर्शन करके तो कोई अपना नृत्य कला का प्रदर्शन करके पैसे अर्जित कर लेता है। इसके अलावा बहुत सारे लोग तो मेले में अपना दुकान ही लगा लेते हैं। शहरों में पिकनिक, क्लब, बार, सिनेमा आदि मनोरंजन के लोकप्रिय साधन है। शहरों के लोग रंगारंग कार्यक्रम अधिक पसंद करते हैं।

देखा जाए तो आज के युग में मनोरंजन के साधनों की भरमार है। उपरोक्त मनोरंजन के साधनों के अलावा एक और बहुत ही लोकप्रिय साधन है, वह है भ्रमण। लोग सप्ताह-महीना काम करने के बाद मनोरम एवं पर्यटन स्थलों पर घूमने जाना पसंद करते हैं। भ्रमण से मन को सुख-शांति और आनंद की प्राप्ति होती है। अत: जैसे मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए भोजन, वस्त्र एवं घर की जरूरत पड़ती है उसी तरह मन को तरोताजा रखने के लिए मनोरंजन भी बहुत आवश्यक है।

ऑनलाइन कक्षाएँ कितना फायदा कितना नुकसान

अनुश्री धारा

प्रस्तावना- ऑनलाइन शिक्षा को सरल शब्दों में इन्टरनेट आधारित शिक्षा भी कहा जा सकता है। कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप के कारण जब विश्व के कई प्रांतो में सरकार ने लॉकडाउन की घोषणा की तब स्कूल व कॉलेज के छात्रों का शिक्षण स्थगित हो गया। इसी समय ऑनलाइन कक्षा के माध्यम से शिक्षण व्यवस्था जारी रही।

ऑनलाइन शिक्षा हांलाकि कोई नई व्यवस्था नहीं है। इसका प्रचलन 20वीं शताब्दी से है। पर लॉकडाउन के कारण इसने अपना लोकप्रिय रुप धारण कर लिया। आज यह देश-विदेश के विभिन्न प्रांतों में प्रचलित है।

ऑनलाइन कक्षा क्या है?

ऑनलाइन कक्षा अथवा शिक्षण ऐसी प्रथा है जिसमें मोबाइल, टैबलेट अथवा कम्पयूटर के माध्यम से शिक्षक अपने छात्रों को शिक्षण देते हैं।

इस नई पद्धति को अपनाने में शिक्षक व छात्र दोनों को ही शुरुआत में कई तकलीफें झेलनी पड़ी, परंतु समय के साथ इससे सामंजस्य बनाने पर यह एक मूल प्रथा बन गई है।

आधुनिक युग में दी गई दूरुस्थ शिक्षा का यह एक साधन बन गई है। आज के युग में कई प्रतिस्पर्धा परीक्षाएँ (स्कूल के, कॉलेज में भर्ती के, कार्मिक संस्थान में न्युक्ति के इत्यादि) ऑनलाइन आयोजित किए जाते है। बच्चों को बचपन से ही इस माध्यम में शिक्षण प्रदान करने पर इन परिक्षाओं में उन्हे सुविधा होती है।

ऑनलाइन में कई क्रैस-कोर्स भी प्रदान किए जाते हैं जिससे बच्चों के ज्ञान में विकास होता है। यह ज्ञान देश-विदेश के किसी भी प्रान्त से प्राप्त की जा सकती है। दूरी की बाधा बीच में नहीं आ पाती है। कोई भी घर बैठे यह ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

ऑनलाइन कक्षा वरदान है या अभिशाप-

लॉकडउन के वजह से हांलाकि प्रायः सभी ने इस पद्धति को तीव्र गति से ग्रहण कर लिया है, परंतु हर किसी नवीन पद्धति के सुव्यवहार व फायदे के साथ उसके कुछ नुकसान भी देखने को मिलता है। पर किसी भी नई पद्धति को अपनाने पर उसकी अनगिनत फायदों के कारण यह इतना लोकप्रिय रूप धारण किया। नीचे दिए गए बिन्दुओं के माध्यम से हम ऑनलाइन कक्षा के लाभ का संक्षिप्त में विवरण देंगेः-

ऑनलाइन कक्षा का लाभ-

1. दूरी कभी ऑनलाइन शिक्षा की बाधा नहीं बन पाती, घर बैठकर देश-विदेश के किसी भी कोने से इसका लाभ उठाया जा सकता है।
2. मौसम के कारण अथवा रास्ते में आई बाधा-विपत्ति का इस पर कोई प्रभाव नही पड़ता।
3. शारीरिक रूप से चलने-फिरने में अक्षम बच्चे भी इसका लाभ उठा सकते हैं।
4. स्कूल, कॉलेज व ट्यूशन आने जाने में व्यय होने वाला समय एंव खर्च दोनों ही बच जाता है।
5. कक्षाओं के बीच में बातचीत एंव समय की औपचारिकता नहीं होती है।
6. बच्चे अपना क्लास चूक जाने पर भी रिकॉर्डेड लेक्चर देखकर अपनी पढ़ाई कर सकते हैं।

ऑनलाइन कक्षा की हानि

किसी भी नवीन पद्धति के लाभ के साथ ही साथ उसकी कुछ हानियाँ भी नज़र आती है, परंतु इनको नज़र अन्दाज़ ना कर हमें इन्हें और भी गंभीरता से देखना चाहिए, नीचे दिए गए बिंदुओं में ऑनलाइन कक्षा के कुछ नुकसान प्रस्तुत हैं-

1. भारत जैसे बड़े देश में कई श्रेणियों के लोग रहते हैं, निम्न श्रेणी के लोग इसका फायदा नहीं उठा पाते।
2. ऑनलाइन शिक्षा में इंटरनेट का होना महत्त्व पूर्ण है, पर तीव्र गति के इंटरनेट न होने की वजह से बाधा उत्पन्न होती है।
3. गैजेट आधारित पढ़ाई की वजह से माता-पिता बच्चों की सही रूप से निगरानी नहीं कर पाते है।
4. कक्षा में अधिक बच्चे होने पर शिक्षक सभी को समान ध्यान नहीं दे पाते हैं और बच्चों का संदेह भी नहीं मिट पाता हैं।
5. प्रायः सभी शिक्षकों को प्रथागत ऑनलाइन कक्षा में असुविधा होती है।

उपसंहार

ऑनलाइन कक्षा एक नवीन पद्धति है जो भविष्य में और भी लाभदायक बनने वाली है, इसे देश-विदेश के हर कोने में हर बच्चों तक पहुंचाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, कई राज्यों ने इसको बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलाई है, राजस्थान में बच्चों को व्हाटसैप के मााध्यम से नोट्स भेजा जाने वाला पोर्टल बनाया है, पश्चिम बंगाल में विद्यार्थियों को टैबलेट दिए गए।

शिक्षकों को भी ऑनलाइन कक्षा में पढ़ाने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, इस नई पद्धति के नुकसान को नज़रन्दाज़ करने के बजाय उसमें सुधार लाने की कोशिश करना चाहिए।

क्या हिंदी अंग्रेज़ी का स्थान ले सकती है : एक विचार

अर्णब बनर्जी

नेल्सन मंडेला ने कहा है कि, 'यदि आप किसी व्यक्ति से ऐसी भाषा में बात करते हैं जो वह समझता हो तो ऐसा संदेश उसके दिमाग तक जाता है, पर यदि आप उससे उसकी मातृभाषा में बात करते हैं तो संदेश सीधे उसके हृदय तक जाता है। "

यह बहुत विवादित मुद्दा है। क्योंकि भारत के आज़ादी के पूर्व अंग्रेज़ी का चाल-चलन इस देश में नहीं था। अंग्रेज़ इस देश में आने के बाद सबसे पहले हमारी भाषा और फिर संस्कृति छीने। कोई भी शासक शासन के लिए संस्कृति को खत्म करना चाहता है ताकि समाज को कोई दिशा न मिल सके। भारत जैसी समृद्ध संस्कृति जहाँ संस्कृत भाषा जो कि 5000 ईशा पूर्व से है और उससे भी प्राचीन तमिल भाषा को माना जाता है। भाषा से मेरा तात्पर्य है वहाँ की संस्कृति क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है। हमारे देश में जहाँ संस्कृत, तमिल, बांग्ला, तेलुगु, मराठी जैसे 6 शास्त्रीय भाषा और 21 क्षेत्रीय भाषाएँ हैं। इस सब भाषाओं को एक तरफ करके अंग्रेज़ी का चयन किया अंग्रेज़ों ने ताकि भारत के लोग अंग्रेज़ी को समझें,उसे सीखें और उसके साहित्य को भी पढ़ें और उनके समाज में मिल जाएँ। जबकि मैक्स म्यूलर जो कि जर्मनी वासी थे और ईस्ट इंडिया कंपनी में कर्मचारी थे, उन्होंने कहा था कि यदि समूची पृथ्वी में कोई अमूल्य सभ्यता है तो वह भारत की भूमि में है।

मातृभाषा वह भाषा है जिसमें माँ जन्म के बाद से ही अपने बच्चे से बात करती है। मातृभाषा का प्रत्येक भारतीय के जीवन में एक अमूल्य स्थान एवं उसके प्रति विशिष्ट संवेदनाएँ होती हैं। भारत जैसे समृद्ध संस्कृति वाले देश में जहाँ 21 की 21 क्षेत्रीय भाषाओं का अपना अलग अस्तित्व है और इन सभी भाषाओं का समुद्र से भी गहरा साहित्य है। अब जीविका के लिए यहाँ के बच्चों को मातृभाषा के अलावा अंग्रेज़ी के रूप में एक नई भाषा सीखनी पड़ रही है। यह अंग्रेज़ी वही भाषा है जो जिसके विद्वान किसी समय इटली, ग्रीस जाकर वहाँ के साहित्य का अध्ययन कर उनका अनुवाद करते थे। यह अवधि संभवतया अंग्रेज़ी साहित्य का सबसे अंधकारमय अवधि(डार्क एज) रही है। अब यह अनूदित साहित्य हमारे बच्चों को पढ़ना पड़ रहा है और उस समाज के बारे में सोचना पड़ रहा है जिसका अस्तित्व यहाँ से पूर्णतः भिन्न है और भारत के लोगों से जिसका कोई लेना-देना ही नहीं है। भारत की आने वाली पीढ़ियों को भी अंग्रेज़ी साहित्य पढ़ाकर अंग्रेज़ एक प्रकार से मानसिक गुलामी का चादर ओढ़ा देना चाहते थे। रामकृष्ण परमहंस ने कहा था कि, 'निजेर बाड़िर काठ उईए खाए, आर काठ कुड़ोते बोने जाए।' अर्थात घर की लकड़ी को दीमक खा रहे हैं और हम लकड़ी लाने जंगल में जा रहे हैं।

कोई भी समृद्ध देश आज अपनी भाषा और अपने साहित्य पर जोर दे रही है पर भारत आज आत्मनिर्भर हो गया है पर भाषा के लिए अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए वह दूसरों की संस्कृति और भाषा पर निर्भर है। यह कैसी दोहरी विचारधारा है?

अब सवाल यह उठता है कि विश्व हमारे भाषा को स्वीकृति देगी या नहीं देगी? तो जवाब अत्यंत ही सरल है जब हमारे बॉलीवुड की बनी फिल्म लोग देख सकते हैं, उसे समझ सकते हैं,उन भावनाओं को महसूस कर सकते हैं उसके गीत गा सकते हैं तो हमारी भाषा को स्वीकृति क्यों नहीं दे सकते हैं। यह अपने आप में एक विचारणीय विषय है। हमारे लेखक,हमारे कवि अपनी किताब अपने विचार पहुंचाने के लिए जबतक अंग्रेज़ी जैसे माध्यम का प्रयोग करेंगे तबतक विश्व भी हमसे यही अपेक्षा रखेगा। भारत की कुल आबादी लगभग डेढ़ सौ करोड़ है और वे डेढ़ सौ करोड़ लोग एक विदेशी भाषा का चयन करके अपने विचार उस भाषा में रख रहे हैं यह मूर्खता नहीं तो और क्या है?

अब सवाल यह है कि यदि मैं अंग्रेज़ी को हटाता हूँ तो इसके बदले हमारे इस विशाल, भाषा की विविधता वाले देश में कौन सी भाषा अंग्रेज़ी का स्थान लेगी? अब मेरे विचार से मुझे स्वदेश में बनी हुई कोई भी भारतीय भाषा स्वीकार है पर आज़ादी के 75वर्ष बाद भी भाषा की गुलामी स्वीकार नहीं है। अगर संस्कृति सीखनी ही है, भाषा ही सीखनी है तो भारत से उत्कृष्ट कोई और देश हो ही नहीं सकता है, पर अंग्रेज़ी हमारे समाज में एक ऐसे वर्ग का परिचय बन चुकी है जो अपने सामाजिक हैसियत का विचार अंग्रेज़ी से करते हैं। शायद यही कारण रहा होगा

कि गुलामी के दिनों में भारतीय वर्ग के कुछ लोग यही सामाजिक हैसियत ग्रहण करने के लिए अंग्रेज़ एवं अंग्रेज़ी भाषा की अधीनतता स्वीकार किए थे। यह वर्गभेद ही था जिसने भारत में अंग्रेज़ी स्थापित किया, दो सौ साल तक अंग्रेज़ हमें अंग्रेज़ी के माध्यम से अपनी संस्कृति में ढालते गए और यह अंग्रेज़ी संस्कृति आजादी पूर्व कुछ लोगों के लिए सामाजिक हैसियत बन गई। यह सामाजिक हैसियत (अंग्रेज़ी) भारत जैसे गरीब एवं पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए चुनौती बन गई। और इस चुनौती को मुमकिन करवाने के लिए यह एक व्यवसाय में परिवर्तित हो गया। आलम यह है साहब कि एक गरीब को दो वक्त की रोटी मिले या ना मिले पर यह उसका सपना है कि उसका बेटा दो शब्द अंग्रेज़ी के जरूर बोले। और इसका फायदा हमारे उद्योगपतियों और पूँजीपतियों ने भी खूब उठाया। बाज़ार में अंग्रेज़ी के प्रति रुझान बढ़ा, लेखकों को मजबूर किया गया कि अंग्रेज़ी में किताबें लिखें। ज्यादा से ज्यादा किताबें अंग्रेज़ी में ही छपी। तरह-तरह के उद्योगपतियों ने प्राइवेट स्कूल के नाम पर अंग्रेज़ी चाल-चलन, उनके किताब, उनके साहित्य आम हिन्दुस्तानी पर थोप दिया और हिंदुस्तान के बाजारों में व्यापार किया । इसकी वजह से हमारे खुद की संस्कृति और सभ्यताओं का दमन होता गया और अंग्रेज़ी अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी एक अलग पहचान बनाती गई। भारत के कुछ राज्य ऐसे भी हो गए जो अंग्रेज़ी से इतना प्रेरित हो गई कि स्कूल में यदि हिंदी पढ़ाई जा रही थी उसका विरोध तक किया। समस्या विरोध का नहीं है पर उस मानसिकता है जिससे हम उभर नहीं पाए हैं। हमें अभी भी ऐसा ही प्रतीत होता है कि अंग्रेज़ी बोलने वाला मनुष्य शिक्षित एवं सभ्य है। यह मानसिकता एक दिन में नहीं आई। यह हममें प्रत्यारोपित की गई और यह मानसिकता जल्द ही हमारे समाज से जाएगी भी नहीं क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेज़ी एक स्वीकृत भाषा है और कई देश ऐसे हैं जो अंग्रेज़ी भाषी हैं। इन देशों के लिए भारत की राज्य भाषा एवं राजभाषा कोई मायने नहीं रखता। तथा इन भाषाओं का उत्थान भारत की निजी समस्या है।

देश जब एक नई दिशा पर है और सामाजिक हिंसा इतनी बढ़ चुकी है कि व्हाट्सप्प यूनिवर्सिटी और इंटरनेट से लोग बहुत जल्दी सचेत हो जा रहे हैं। इन परिस्थितियों में मतभेद का वातावरण फैलाना बहुत आसान है। भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के अनुसार देश को हिंदी भाषा वर्ग के अनुसार तीन क्षेत्रों में बांटा गया है, 'क', 'ख', 'ग' , यह एक सही एवं सराहनीय निर्णय है पर इससे अंग्रेज़ी को बदला नहीं जा सकता। विद्यालय स्तर पर जबतक नवांकुरों को एक विकल्प दिया जाए कि हिंदी अथवा अंग्रेज़ी किसी एक भाषा में से एक का चयन किया जाए और शिक्षा प्रणाली में मातृ भाषा अनिवार्य हो । यह एक समय सापेक्ष परियोजना हो । अंग्रेज़ी की पढ़ाई अत्यंत सरल एवं कम अंक का होना चाहिए, इसे स्कूल स्तर पर अत्यंत सहज कर दिया जाए और हिंदी और मातृभाषा का वजन बहुत अधिक और उसपर बच्चों से मेहनत अधिक करवाया जाए ताकि मातृ भाषा और हिंदी पढ़ने के लिए छात्र बढ़ी हो जाए और उसपर अधिक मेहनत करे। इसके आगे की समस्त उच्च शिक्षा अंग्रेज़ी से अनूदित कर हिंदी और मातृभाषा में किया जाए ताकि लोगों को उनकी मातृ भाषा और हिंदी में सहजता से सामग्री उपलब्ध हो जाए। इससे अंग्रेज़ी के प्रति झुकाव कम हो जाएगा। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार की जितनी रिक्तियाँ आएं उनके परीक्षा का माध्यम मातृभाषा और हिंदी हो, अंग्रेज़ी के प्रश्नपत्रों का चलन बंद होते ही भारतीय भाषाओं का चलन बढ़ जाएगा। इससे उद्योगपति भी भारतीय भाषाओं के उत्थान के लिए निवेश करना प्रारंभ कर देंगे और क्रमशः बाजार में भारतीय भाषाओं का बोलबाला होने लगेगा और अंग्रेज़ी स्वतः ही हाशिये पर आने लगेगी। हमें किसी भाषा से विवाद नहीं है पर जो भाषा हमपर थोपी गई है, हम उससे बाहर निकलना चाहते हैं।

मैं स्वयं अफ्रीका के जिभूति देश में जाकर चकित हो गया कि उस देश में लोग इतनी गरीबी से जूझ रहे हैं परंतु वहाँ भी आज सोमालिया के लोग अपना समय फ्रेंच सीखने में लगा रहे हैं। सोमालिया में फ्रेंच कॉलोनी बसी हुई है, उस कॉलोनी के काम कर पाने के लिए खुद को योग्य बनाने के लिए। प्रारंभ में उनकी भाषा फ्रेंच नहीं थी पर उनके यहाँ कुछ फ्रेंच व्यापारी आए और वहाँ की जनता को फ्रेंच सिखाना शुरू कर दिया। इससे क्रमशः सोमालिया की भाषा फ्रेंच होती जा रही है। हो सकता है कि आने वाले समय में सोमालिया की अपनी भाषा पूर्ण रूप से खत्म हो जाए और फिर वहाँ फ्रेंच भाषा एकमात्र भाषा बनकर रह जाए। यदि नीति निर्धारकों ने या सरकार ने भारतीय भाषाओं के संवर्धन और संरक्षण के लिए ऐसा कोई उपाय न किया तो कालांतर में भारतीय भाषाओं का जिक्र केवल इतिहास के पन्नों में ही दबकर रह जाए। हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं को पूर्णतः मिटाकर अंग्रेज़ी ही एकमात्र भाषा बनकर रह जाएगी।

Translation Memory- कंठस्थ

भारत सरकार राजभाषा विभाग द्वारा विकसित स्मृति आधारित तकनीकी

संकलन- राजभाषा शाखा

भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा स्मृति आधारित अनुवाद के लिए विकसित यह नवीनतम प्रणाली है जो आने वाले समय में प्रशासनिक और कार्यालयीन अनुवाद में अमूलचूल परिवर्तन ला देगा। फिलहाल यह शैशवावस्था में है और इसे भारत के विभिन्न अनुवादकों से सहयोग की अपेक्षा है। अभी इसमें अनुवाद हेतु सामग्री और अनूदित सामग्री डालने की आवश्यकता है। इससे इसका डेटा-बेस काफी मजबूत होगा और फिर इसका विशेष लाभ यह मिलेगा कि डेटाबेस में डाली गाई सामग्री से मिलता-जुलता शब्द या वाक्य डालते ही हु-ब-हू अनुवाद प्राप्त हो जाएगा वह भी आपके आवश्यकतानुरूप पत्र यथा कागजात के प्रारूप में। यह सुविधा फिलहाल गूगल या माइक्रोसॉफ्ट जैसी किसी भी मशीनी अनुवाद प्रणाली में नहीं है। गूगल ने भी जब अनुवाद का सॉफ्टवेयर बनाना प्रारंभ किया था तो दुनिया भर के अनुवादकों ने उसके प्रणाली में सामग्रियाँ डाली, अनूदित सामग्री में यदि कोई त्रुटि हो तो उसे संशोधित किया और गूगल के डेटाबेस को सम्पन्न बनाया जिसका परिणाम आज स्पष्ट रूप से झलकता है। यदि आपको लगता है कि भारत की भी अपनी एक विशिष्ट प्रणाली हो जो भारतीय सरकारी कार्यालयों के लिए सही और सार्थक अनुवाद उपलब्ध करवाए तो समय निकाल कर कंठस्थ में सामग्री डालने का एक अभियान शुरू करें। राजभाषा विभाग के : वेबसाइट पर इसका सीधा लिंक https://kanthasth-rajbhasha.gov.in/

आपकी मान्यताएं आपके विचार बन जाते हैं, आपके विचार आपके शब्द बन जाते हैं, आपके शब्द आपके कार्य बन जाते हैं, आपके कार्य आपकी आदत बन जाते हैं, आपकी आदतें मूल्य बन जाते हैं, आपके मूल्य आपकी नीयति बन जाती हैं।

महात्मा गांधी

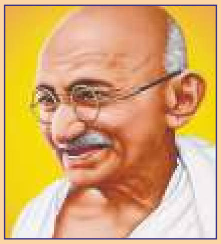

इतिहास के आईने से हिंदी का भविष्य

बिनय कुमार शुक्ल

यूँ तो 'भाषा' को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम भर मानकर इसपर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है, पर यदि गूढ़ता से विचार करें तो पाएंगे कि इस धरा-धाम पर जो भी है चाहे वह चर हो, अचर हो, मशीन हो सबकी अपनी एक विशिष्ट भाषा है जो उसकी विशेष पहचान है। इस भाषा के ही माध्यम से वे अपने वर्ग में या फिर वर्ग के बाहर के परिवेश और व्यक्तियों से संवाद स्थापित करते हैं।

ऊपर की पंक्तियों में मैंने मशीन की भाषा की बात की है। संभव है कि कुछ विद्वान इस बात पर आपत्ति दर्शाएँ की मशीन की भाषा कैसे हो सकती है?

सच भी है कि मशीन की भाषा कैसे हो सकती है !

पर यदि ध्यान से सोचें तो पाएंगे कि आधुनिक युग में सम्प्रेषण के लिए कंप्यूटर, मोबाइल आदि जैसे जिन यंत्रों का हम व्यवहार कर रहें हैं उन सबकी एक भाषा है जिसके बिना वे यंत्र सर्वथा बेकार ही हैं। सिर्फ यही नहीं जितने प्रकार की मशीनों का हम व्यवहार करते हैं उनकी भी अपनी एक अलग भाषा है। एक उदाहरण से यदि हम समझने का प्रयास करें और मोटरसाइकिल या कार का ही उदाहरण लें तो हम पाएंगे की जबतक ये सुचारु रूप से काम कर रहें तबतक उनकी अलग आवाज होती है पर जैसे ही उनमें कुछ खराबी आती है, उनके लय और आवाज में परिवर्तन आ जाता है। ये मशीनें अपनी भाषा में अपने अस्वस्थता की जानकारी दे ही देती हैं। वह अलग बात है कि इनकी मरम्मत करने वाला इनकी भाषा बखूबी समझता है तभी तो जैसे ही मिस्त्री आता है, सबसे पहले वह कार या मोटर साइकिल या अन्य किसी यंत्र को चलाकर उसकी आवाज सुनकर उसका निदान करता है।

अर्थात, मानें या ना मानें, जीवन के साथ ही भाषा एक बहुमूल्य अवयव के रूप में किसी न किसी रूप में जुड़ा ही रहता है। चाहे जिस रूप की भाषा हो। भाषा के इन रूप की जानकारी की जिज्ञासा ने मुझे हिंदी के उद्भव की बात इतिहास के पन्नों से खंगालने के लिए प्रेरित किया। यूँ तो कई तकनीकी विद्य और अन्य विधाओं के विद्वान इतिहास को भूली-बिसरी यादें या फिर दंत कथाओं का एक हिस्सा मानते हुए इतिहास अध्ययन को बेकार की बातें या फिर गड़े मुर्दे उखाड़ने जैसी बातें कहकर एक सिरे से नकारते आ रहे हैं, पर संभवतया यह उनका कोरा भ्रम ही है। इतिहास हमें यदि पुरानी बाते याद दिलाता है तो वह इस बात की भी प्रेरणा देता है कि किसी भी विषय पर पूर्व में की गई गलतियों से समाज का यदि नुकसान हुआ हो उन्हें पुनः न दोहराने का उपक्रम किया जाए और यही बात इतिहास के अध्ययन को बल प्रदान करता है।

एक बार भारत के आदरणीय संत श्री-श्री रविशंकर जी ने अपने प्रवचन के दौरान बताया था कि जिस भाषा को सरकार का समर्थन और संरक्षण प्राप्त होता है वही भाषा फलती-फूलती है और फिर उसका ही प्रसार होता है। उनकी इस बात पर गौर करते हुए मैंने हिंदी के इतिहास पर नज़र डालने के प्रयास में जब इतिहास खंगालना प्रारंभ किया तो ढेरों चौंकाने वाली जानकारियाँ सामने आई।

सन 1509 के पूर्व भारत में मुगलों का शासन रहा है। इस शासन काल में कुछ स्थानों पर हिन्दू राजा भी रहे हैं। यह माना जाता है कि वैदिक काल में भारत की भाषा संस्कृत रही है पर मुगल काल में सरकारी कामकाज की भाषा फारसी बन गई, आगे चलकर सन 1509 ईस्वी में भारत के कुछ हिस्सों पर पुर्तगालियों का शासन हुआ जो लगभग 100वर्षों तक चला। स्वाभाविक है कि उन दिनों जिन प्रांतों पर उनका अधिकार था वहाँ राजकाज की भाषा पुर्तगाली ही रही होगी। आगे चलकर सन 1608 में कैप्टन हॉकिंस के नेतृत्व में प्रथम अंग्रेज़ी जहाजी बेड़ा भारत पहुँचा। उस समय मुगल सम्राट जहाँगीर का शासन था। और फिर धीरे-धीरे अंग्रेज और अंग्रेज़ी भारत भूमि पर पसरते चले गए।

मुगल काल में भी भारत सहित विश्व के कई हिस्सों में अवधि भाषा पढ़ी-बोली और लिखी जाती थी। कुछ हिस्सों में पालि का प्रचलन था। पर कालांतर में मानव मन ने चाहे फारसी बोलने वालों जैसा व्यवहार करने के लिए या अन्य कारणों से ही सही फारसी भाषा की शैली

अर्थात खड़ी बोली को पूर्णतः स्वीकार करना प्रारंभ कर दिया और जो कभी बोली के रूप में प्रचलित हुई थी वह आज हिंदी भाषा के रूप में एक नया अवतार लेकर आई और फिर भारत भर में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली एक समग्र 'भाषा' हिंदी का उद्भव हुआ। ऐसा माना जाता है कि खड़ी बोली शब्द का प्रयोग द हिंदी स्टोरी टेलर नामक पुस्तक के लेखक 'गिलक्राइस्ट' ने किया था। मगर इसी के साथ संवत 1860 में लल्लूलाल जी ने अपनी कृति प्रेमसागर में भी हमें खड़ी बोली शब्द से परिचित कराया। इसके साथ ही धीरे-धीरे हिंदी एक अलग भाषा के रूप में आगे बढ़ती गई। इतिहास और इंटरनेट पर विकिपीडिया के पन्नों में कुछ और खोने के बाद हिंदी से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तारीखों की जानकारी मिली जो निम्नवत है :-

18वीं शताब्दी : भरतपुर राज्य तथा पूर्वी राजस्थान के कई राजवाड़े हिन्दी (ब्रजभाषा) में कार्य कर रहे थे।

सन 1835 : बिहार में हिन्दी आन्दोलन शुरू हुआ था। इस अनवरत प्रयास के फलस्वरूप सन् 1875 में बिहार में कचहरियों और स्कूलों में हिन्दी प्रतिष्ठित हुई।

सन 1882 : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने शिक्षा आयोग (हन्टर कमीशन) के समक्ष अपनी गवाही दी जिसमें हिन्दी को न्यायालयों की भाषा बनाने की महत्ता पर बल दिया।

1893 : काशी नागरीप्रचारिणी सभा की स्थापना। इनका उद्देश्य हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी के समर्थन में तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार और स्वीकारोक्ति के लिए प्रयास करना। इसके लिए उनका आंदोलन जारी था तभी सन् 1896 में ब्रिटिश सरकार ने सरकारी दफ्तरों और अदालतों में फारसी अक्षरों की जगह रोमन लिपि लिखने का एक आदेश निकाला। सरकार के इस आदेश से नागरी प्रचारिणी सभा और हिन्दी सेवियों के बीच काफी उथल-पुथल मच गई। नागरी भाषा के समर्थकों को इस बात का भय था कि यदि अदालतों और सरकारी दफ्दरों में रोमन लिपि लागू कर दी गई तो अदालतों में नागरी भाषा का द्वार हमेशा के लिए बन्द हो सकता है। नागरी प्रचारिणी सभा ने अदालतों में रोमन लिपि के विरोध में आन्दोलन करना शुरू कर दिया। हालांकि इस आंदोलन से हिंदी के कार्यान्वयन को काफी बल मिला। 'सरस्वती' के अप्रैल 1900 के अंक में 'पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवध में नागरी अक्षर का प्रचार' लेख में गर्वनर एंटोनी मैकडानेल के आदेश को अक्षरशः प्रकाशित किया गया। वह इस प्रकार है-

(1) सम्पूर्ण मनुष्य प्रार्थनापत्र और अर्जी दावों को अपनी इच्छा के अनुसार नागरी या फारसी के अक्षरों में दे सकते हैं।(2) सम्पूर्ण सम्मन, सूचनापत्र और दूसरे प्रकार के पत्र जो सरकारी न्यायालयों वा प्रधान कर्मचारियों की ओर से देश भाषा में प्रकाशित किए जाते हैं, फारसी और नागरी अक्षरों में जारी होंगे और इन पत्रों की शेष भाग की खानापूर्ति भी हिन्दी भाषा में उतनी ही होगी जितनी फारसी अक्षरों में की जाए।(3) अंग्रेज़ी अफसरों को छोड़कर आज से किसी न्यायालय में कोई मनुष्य उस समय तक नहीं नियत किया जायगा जब तक वह नागरी और फारसी अक्षरों को अच्छी तरह से लिख और पढ़ न सकेगा।

ऊपर का विवरण देखने में बहुत ही सामान्य सा दिख रहा होगा, पर आजादी के पूर्व तक भारत और इसकी भाषा के लिए सजग लोगों ने एक देश और एक राष्ट्र भाषा के लिए काफी प्रयास किया। इस प्रयास का ही फल है कि 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने यह निर्णय लिया कि हिन्दी भी केन्द्र सरकार की आधिकारिक भाषा होगी। क्योंकि भारत मे अधिकतर क्षेत्रों में ज्यादातर हिन्दी भाषा बोली जाती थी इसलिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का निर्णय लिया और 14.9.1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित करवाने के लिए काका कालेलकर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविन्ददास आदि साहित्यकारों को साथ लेकर व्यौहार राजेन्द्र सिंह ने अथक प्रयास किये। यहाँ से हिंदी के प्रति प्रेम और घृणा दोनों के भाव जनमानस में प्रस्फुटित होने लगे। कहीं हिंदी का विरोध हुआ तो कहीं हिंदी के समर्थन में अथक प्रयास। संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा से हटकर राजभाषा के रूप में प्रतिस्थापित कर दिया गया किन्तु इसके साथ संविधान में यह भी व्यवस्था की गई कि संघ के कार्यकारी, न्यायिक और वैधानिक प्रयोजनों के लिए 1965 तक अंग्रेज़ी का प्रयोग जारी रहे। और दिनांक 10.5.1963 को अनुच्छेद 343(3) के प्रावधान व श्री जवाहर लाल नेहरू के आश्वासन को ध्यान में रखते हुए राजभाषा अधिनियम बनाया गया। इसके अनुसार हिन्दी संघ की राजभाषा व अंग्रेज़ी

सह-राजभाषा के रूप में प्रयोग में लाई गई। साथ ही अधिनियम में यह व्यवस्था भी थी कि केन्द्रीय सरकार द्वारा राज्यों से पत्राचार में अंग्रेज़ी के प्रयोग को उसी स्थिति में समाप्त किया जाएगा जबकि सभी अहिंदी भाषी राज्यों के विधान मण्डल इसकी समाप्ति के लिए संकल्प पारित कर दें।

कुछ जनमानस की बात और कुछ संवैधानिक प्रावधान दोनों ने मिलकर हिंदी को बढ़ाने का प्रयास तो जरूर किया पर सह भाषा के रूप में अंग्रेज़ी को जारी रखने के निर्णय ने लोगों में हिंदी के इतर अंग्रेज़ी का प्रेम भरना जारी रखा। स्वाभाविक ही है। जो जनमानस वर्षों तक अंग्रेजों की गुलाम रही उनमें अंग्रेज़ी के प्रति सम्मान और प्रेम हो जाना स्वाभाविक ही है। और शायद इसी मनोवैज्ञानिक दाब के कारण भारत का अनपढ़ व्यक्ति भी यदि हस्ताक्षर करना सीखता है तो वह अंग्रेज़ी को ही प्राथमिकता देता है। हस्ताक्षर से शुरू होकर धीरे-धीरे अंग्रेज़ी ने हिंदी को हाशिये पर धकेलना शुरू कर दिया। इसी का फल है कि आज आजादी के 75 वर्ष बीत जाने के बाद भी केंद्र सरकार द्वारा हिंदी के कार्यान्वयन के अथक प्रयास सफल नहीं हो रहे हैं और हिंदी केवल सरकारी आंकड़ों की भाषा बनकर हाशिये पर सिमटती चली जा रही है। यह तो एक छोटा सा उत्पीड़न है पर एक अघोषित विस्फोट का क्रम प्रारंभ हो चुका है जो शायद किसी को दिख नहीं रहा है या लोग देख कर अनजान हैं।

एक बार पुनः सन 1896 के ब्रिटिश आदेश की ओर आपका ध्यान ले जाना चाहूँगा जहाँ फारसी को रोमन लिपि में लिखने की कवायद हुई थी। हालांकि ऐसा हो तो न सका पर खड़ी हिंदी ने धीरे-धीरे अवधी, पालि, भोजपुरी कई क्षेत्रीय भाषाओं को अपने में समाहित कर लिया, दूसरी ओर राजकाज में हिंदी लिपि में फारसी लिखी जाने लगी। कालांतर में फारसी का प्रचालन स्वतः ही समाप्त होता गया। अब यह केवल धर्मग्रंथों की ही भाषा बनकर रह गई है जैसे संस्कृत हो गई है। हालांकि इन समस्त परिवर्तनों के लिए लोगों ने बाकायदा प्रयास किया था पर आज जो भाषा के क्षेत्र में नया हो रहा है वह है रोमन लिपि में हिंदी लिखा जाना।

यह बात केवल हिंदी भाषा के साथ ही नहीं है। अधिकांश भारतीय भाषाओं के साथ हो रहा है। और तो और कुछ लोगों ने बकायदा हिंदी की लिपि को देवनागरी से बदल कर रोमन करने का अभियान भी प्रारंभ कर दिया था। फिल्म उद्योग के हिंदी स्क्रिप्ट या संवाद रोमन लिपि में ही तो लिखे जाते हैं। यूट्यूब में एक वीडियो बनाने के लिए मैंने एक बार दो बच्चों के बीच वार्तालाप की प्रस्तुति की थी। उस प्रस्तुति के दौरान बच्चे को उसका संवाद हिंदी में लिखवा रहा था। मैंने देखा कि बड़ी तेजी से एक बालक रोमन लिपि में हिंदी लिख रहा था। पूछने पर उसने बताया कि हिंदी को रोमन लिपि में लिखने में आसानी होती है तथा जल्दी से लिख लिया जाता है। यह तो एक बालक है। सोशल मीडिया पर अनुवादक और हिंदी अधिकारी की नौकरियों के लिए प्रयासरत युवाओं के एक मंच पर मैंने हिंदी को रोमन लिपि में लिखे जाने की बात पर जब आपत्ति दर्ज की तो लोगों ने कहा कि हिंदी को देवनागरी लिपि में लिखने में दिक्कत होती है और गति भी कम हो जाति है इसलिए रोमन में लिखना पड़ता है। यह तो थे हिंदी के क्षेत्र में रोजगार तलाशते युवा जो स्वेच्छा से हिंदी के बदले रोमन लिपि अपना रहे हैं। मैंने हिंदी के कई विद्वानों, प्राध्यापकों एवं शिक्षकों भी रोमन हिंदी लिखते हुए देखा है। सौभाग्य से उत्तर प्रदेश के कुछ ग्रामीण अंचलों में जाने का मौका मिला था। वहाँ दो-चार दर्जा पढ़े युवा और वृद्ध जनों को भी मैंने सोशल मीडिया पर रोमन लिपि में हिंदी और भोजपुरी लिखते देखा। स्वेच्छा से रोमन लिपि का बहुतायत प्रयोग उस बड़े भाषाई विस्फोट की ओर इशारा कर रही है जो आने वाले समय में कई भाषाओं की लिपियों को समाप्त कर देगा। यदि लिपि ही परिवर्तित हो गई तो भाषा की शुद्धता और उसका औचित्य ही क्या रह जाएगा। यूँ कहें तो जो हाल फारसी, अवधी, पालि और अन्य समृद्ध क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ वह हिंदी के साथ भी हो सकता है और उसके लिए ना तो किसी सरकारी फरमान की आवश्यकता होगी ना ही किसी बड़े आयोजन की। सबकुछ इतनी शांति और त्वरित रूप से होगा कि पता ही नहीं लगेगा कि हिंदी के पैर के नीचे से जमीन कब खिसक गई। हालांकि सरकारी प्रयास तो अब भी है कि हिंदी का संवर्धन और कार्यान्वय हो और इसके लिए करोड़ों रुपये खर्च भी किए जा रहे हैं पर यदि इतिहास के आईने से देखूँ तो लगता है कि 'बकरे की माँ कबतक खैर मनाएगी..'

प्रांची मिश्र

बढ़े चले जा रहे हैं, रुकेंगे कहाँ.....

ना मंज़िल है कोई ना कोई कारवाँ
बढ़े चले जा रहे हैं, रुकेंगे कहाँ।
कुछ पल बचा लो अपनो के लिए
जो देखोगे पलट के, ये मिलेंगे कहाँ।
वक़्त का तक़ाज़ा कहता है यही
जो बीत गये पल, फिर आएँगे कहाँ।
आओ इस पल को यादगार बना लें
जो बातें होंगी अभी, फिर करेंगे कहाँ।
हम भागते रहे माया के लिए हर जगह
सुख जो परिवार में है, वो मिलेगा कहाँ।

सुकांत टिकादार

एक सवाल

आज 15 अगस्त है,
आज़ादी का दिन है।
मेरी बेटी सुबह से ही
हाथों में तिरंगा झंडा लेकर
उछल रही है।
आज आज़ादी है,
आज आज़ादी है।
ऐसा बोलकर मुझसे पूछा-
आज़ादी क्या है?
मैंने कहा-
मेरे मन मुताबिक
मैं जो कुछ भी करना चाहूँ,
वह करूँगा,
जहाँ चाहूँगा, वहाँ जाऊँगा,
कोई कुछ नहीं बोलेगा।
मैं खुद अपना मालिक हूँ।
तब मेरी बेटी ने मुझसे पूछा-
पापा, तब माँ कब आज़ाद होगी?

रवि सुशांत पाण्डेय

आत्म-खोज

अब कौन रोज़-रोज़ खुदा ढूंढ़े।
जिनको न मिले वही ढूंढे।
चलना ही तो है मुसाफिर की तरह,
अब कौन किसके कदमों के निशां ढूंढ़े |
मंज़िलों की तो बात ही अलग है,
वहाँ पहुँच के बता कितने सितारे ढूंढे,
रात आई है तो सुबह भी होगी,
आधी रात में कौन सुबह ढूंढ़े।
उजड़े हुए गुलशन की वीरानगी न देख,
फूलों ने कभी यहाँ महफिलों में बहार ढूंढे,
खंडहर से तो पूछ इमारत कितनी बुलंद थी,
यही कशमकश तो हर शख्स खुद में ढूंढे,
चलते फिरते पत्थरों के शहर में,
पत्थर खुद पत्थरों में भगवान ढूंढ़े।

कोमल मिश्र

कहानी

गरीब किसान

एक गरीब किसान कड़ी मेहनत करता था। लेकिन उसकी गरीबी खत्म नहीं हो रही थी। वह गांव के प्रसिद्ध संत के पास गया और अपनी सभी समस्याएं बता दी। संत ने गरीब से कहा कि मैं तुम्हारे घर आकर तुम्हारी हालातों का जायजा करूंगा और फिर समाधान बताऊंगा।

संत एक दिन गरीब के घर पहुंच गए। संत बहुत ही विद्वान थे। हालांकि उस वक्त घर पर किसान नहीं था। किसान की पत्नी ने संत से कहा कि वह तो खेत पर गए हुए हैं। मैं अभी अपने बच्चे को उनको बुलाने के लिए भेजती हूँ। आप कुछ समय प्रतिक्षा करें। वह बच्चा तुरंत ही खेत पर अपने पिता को बुलाने के लिए चला गया। किसान को जब यह पता चला तो वह दौड़ा-दौड़ा अपने घर पर आया। किसान के पास एक पालतू कुत्ता भी था। वह भी किसान के साथ आया था और जोरों से हाँफ रहा था।

कुत्ते की हालत देखकर संत ने किसान से पूछा क्या तुम्हारा खेत ज्यादा दूर है। किसान ने कहा कि नहीं खेत पास में ही हैं। किसान ने पूछा कि गुरु जी आपको ऐसा क्यों लग रहा है। संत ने बताया कि तुम्हें देखकर मुझे काफी आश्चर्य हो रहा है। तुम और तुम्हारा कुत्ता एक साथ आए हैं। लेकिन तुम बिल्कुल भी थके हुए नहीं हो, जबकि तुम्हारा कुत्ता जोरों से हाँफ रहा है।

किसान ने बताया कि हम दोनों एक ही रास्ते से आए हैं। मेरा खेत पास में ही है। मुझे थकान महसूस नहीं हो रही है। लेकिन मेरा कुत्ता थक गया है। इसकी वजह यह है कि मैं सीधे रास्ते से चलकर घर आया। कुत्ता अपनी आदत से मजबूर है। संत ने पूछा कि ऐसा क्या तो किसान ने बताया कि जब भी ये कुत्ता दूसरों को देखता है तो हाँफने लगता है और फिर उनके पीछे दौड़ता है। कुछ समय बाद यह मेरे पास वापस आ जाता है। इसी कारण यह थक गया है।

संत ने बताया कि इसी तरह हमारे साथ भी होता है। हम एक लक्ष्य को नहीं बल्कि कई लक्ष्यों को एक साथ पाना चाहते हैं यानी कि हम जब तक एक लक्ष्य को हासिल नहीं कर लेते तब तक दूसरे लक्ष्य की ओर भागने लगते हैं। हम अपनी परेशानियों और दूसरों के दुखों को देखकर परेशान होने लगते हैं। हमें अपना काम ईमानदारी से करना चाहिए।

विज्ञान कहानी

विजया

अर्पण घोष
पुत्र अपूर्व घोष
(एम बी बी एस अध्ययन रत)

राष्ट्रीय प्रयोगशाला, कोयमबटुर

24 अक्टूबर, 2020

"अच्छा, फिर निकलता हूँ, दुर्गापूजा के बाद भेंट होगी। तुम तो सबसे बाद में निकलोगी उमा? अच्छे से ताला लगाना और सारे सेटअप एक बार ठीक से देख लेना," इतना कहते हुए डॉ. हिरण्मय सेनगुप्ता अपने बैग से चाबी निकालते हुए बाहर की ओर बढ़े।

"पर सर, मैं तो रोज ही आऊँगी," माइक्रोस्कोप से बिना नज़र हटाए ही उमा ने जवाब दिया।

"मतलब??", डॉ. सेनगुप्ता भौंचक्के रह गये।!

"मतलब सर, जो कल्चर हम तैयार कर रहे हैं, अगले तीन दिनों में उनमें कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होने वाला है। न आने से पिछले चार महीने की मेहनत पर पानी फिर जायेगा।" उमा की निगाहें अब भी कल्चर के प्लेट पर ही थीं।

"हाँ, वह तो ठीक है, पर तुम अकेले कैसे संभालोगी?", प्रयोगशाला के कनिष्ठतम कार्मिक का अपने कार्य के प्रति यह समर्पण देख वे हतप्रभ रह गए, पर खुश भी हुए। फिर भी दुर्गापूजा की बात है। बच्ची है, थोड़ा उत्सव मना लेगी।

"मैं उसके साथ रहूँगा सर; आप चिंता ना करें" तभी डॉ. अर्णव मजूमदार आ गये, प्रयोगशाला में उन्हें सभी अनु नाम से पुकारते हैं।

"ठीक है, जैसी तुम्हारी मर्जी, काम जारी रखो। यदि जरूरत हुई तो फोन कर लेना। आनंद मनाओ, उत्सव की अग्रीम शुभकामना" कहते हुए डॉ. सेनगुप्ता प्रयोगशाला से बाहर चले गये।

25 अक्टूबर 2020, महासप्तमी

कोविड 19 के टीका के आविष्कार के बारे में ढेरों तर्क-वितर्क, षड्यन्त्र- आक्रमण चल रहा था। इसका प्रभाव भी चारों ओर दिख रहा था। बस अछूता था तो एन एल सी के वैक्सिनॉलॉजी विभाग का यह प्रमुख समिति। पिछले चार महीने से ये दिन रात परिश्रम किये जा रहे हैं और इसी प्रयोगशाला में जमे हुए हैं। विशेष रूप से डॉ. उमा चक्रवर्ती जो माइक्रोबायोलॉजी में पर स्नातकोत्तर हैं, रोल ऑफ सेलुलर डिफेंस इन वाइराल अटैक में ऑक्सफोर्ड से पीएचडी हैं; उम्र यही कोई 28 वर्ष के आसपास होगी, प्रयोगशाला में सबसे जूनियर पर आते ही जैसे इसने सबकुछ बदल दिया हो। शोधरीति, विचारधारा, आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करने की भावना और सफलता भी मिली। कोविड 19 के स्टेन बदल रहे हैं यह उस लड़की के कारण ही पता लग पाया। इसीलिए सब उसका सम्मान करते थे और उसकी बातें भी मानते थे।

आज एंटीवायरल प्रोटीन कल्चर कर रही है, अर्णव साथ में है। पिछले कुछ दिनों से सेलुलर डिफेंस को साथ लेकर वाइरल रिप्लिकेशन को रोकने के लिए जो अतुलनीय प्रगति हो रही है वह अकल्पनीय है। हालाँकि इसमें अर्णव का भी कम योगदान नहीं है। एक कप कॉफी देते हुये अर्णव ने उमा को कहा, "चलो यह एंटी डिप्रेशन सस्पेंशन, पी लो।"

उमा ने मुस्कुराते हुए कहा कि यदि सबकुछ ठीक-ठाक रहा तो परसों तक टीके के लिए केमिकल सेफ़्टी एनलिसिस रिपोर्ट तैयार हो जाएगी।

"वाह, काफी बढ़िया खबर है," अर्णव खूब खुश हुआ, "चलूँ थोड़ा म्यूटेशन स्क्रीनिंग प्लेट देख आता हूँ" कहते हुए वह चला गया।

26 अक्टूबर 2020, महाष्टमी

कुर्ता-पजामा पहने अर्णव प्रयोगशाला आया। टेकनीशियनों के साथ थोड़ी देर हँसी-मज़ाक कर अंदर चल दिया। देखा कि उमा कुछ लिख रही थी। "क्या!! क्या लिख रही हो??" अर्णव ने थोड़े नाटकीय अंदाज में यह बात कही।

"वही, फाइनल केमिकल रिपोर्ट, जिसकी आवश्यकता पड़ेगी, बस वही।" उमा लिखती रही और जवाब देती रही।

"तो कहो, सफल होना ही है !!" अर्णव ने भी कुछ रसिक होते हुए अपना काम शुरू कर दिया। "देखा जाये", संभवतः उदासीन होकर उमा ने जवाब दिया।

उसे बार-बार घर की याद या रही थी; पिताजी, माँ, भाई, पुष्पांजलि, धुनुची नाच, प्रसाद खाना, मेडॉक्स पर अड्डा और.. ..", "क्या सोचने लागी!! हट" उमा उठकर खिड़की के पास चली गयी। काम करते-करते शाम हो गयी। अर्णव अभी-अभी चला गया। उमा अब भी लिखे जा रही थी, या कुछ सोच रही थी।

27 अक्टूबर 2020, महानवमी

"कहाँ हो, सारे लोग?", एक डिब्बा मिठाई लेकर अर्णव आ पहुँचा। रोज उमा पहले चली आती है, आज आने वालों की लिस्ट में दिखी नहीं, मिठाई खाने सभी आए पर उमा नहीं आई।

यह लड़की गई कहाँ?? अर्णव प्रयोगशाला के मुख्य कक्ष में आ गया। "उमा .. .. उमा .. ..", अर्णव ने आवाज लगायी। अ.. .. अर्णव .. .. अर्ण .. , टेबल के दूसरी ओर से एक क्षिण आवाज आई। दौड़ता हुआ अर्णव वहाँ पहुँचा, देखा उमा अर्धचेतनावस्था में पड़ी हुई है।

"अरे, क्या हुआ उमा???", अर्णव समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे! उमा केवल सी सी टी वी की ओर इशारा कर रही थी। अर्णव ने शीघ्रता से फुटेज चलाया। उसने जो देखा उससे समझ पा रहा था कि क्या होने वाला है।

आतंकित हो उठा अर्णव। कल रात आठ बजे के आसपास जब उमा प्रयोगशाला से बाहर निकल रही थी कि एक धमाके की आवाज आई, कल्चर मीडियम का सेफ़्टी ग्लास फटकर उमा के हाथ में आ लगा, उसका कट गया। कल्चर को बचाने के लिए बिना सेफ़्टी किट के टूटे हुए स्थान को उमा ने अपने हाथों से दबाए रखा, बाद में उसे शील्ड से ढक दी। इसके आगे की बात समझने लायक विवेक तो अर्णव में था ही। सिवियर वाइरल टॉक्सिकोसिस (severe viral toxicosis) अर्थात इसका परिणाम मृत्यु।

अर्णव उमा को अस्पताल ले जाने की व्यवस्था करता है। उसे भी पता है कि कुछ किया नहीं जा सकता, पर फिर भी .. .. ..

विजया दशमी

पिछली रात से ही पूरी रात अर्णव अस्पताल में ही बैठा है, प्रयोगशाला के देखभाल की जिम्मेदारी किसी और को दिया गया है। डॉ. सेनगुप्ता टूट चुके हैं। वे इसके लिए खुद को दोषी समझ रहे थे। उमा के घर वालों को भी खबर दी जा रही थी।

माँ दुर्गा की भी आज विदाई का समय है, इस समय आकाश-हवा और प्रकृति का हर रंग बड़ा ही करुण हो उठता है। अर्णव अंदर गया। उसे देख उमा ने मुस्कुराने की कोशिश की, पर मुस्कुरा न सकी, अब शक्ति नहीं रही। इशारे से कुछ समझने की कोशिश की, अर्णव उसके मुँह के पास अपने कान लाया। उसने बड़ी धीमी आवाज में बताया, 'पेपर तैयार हो गया है , और कल्चर भी सफल रहा, हाँ मैंने कोरोना विषाणु को अपने प्रयोगशाला में बड़ी सफलता से मात दे दी है," उसके आँखों से अश्रु धारा फूट पड़े। अर्णव की आँखें भी सजल हो उठीं। फिर कुछ कहा उमा ने, "अब मेरे जाने का समय हो चुका है, देख नहीं रहे हो वरण हो गया है और अब विसर्जननन .. .. .."

दोनों आँखें पथरा गईं। अर्णव पत्थर सा हो गया। ऐसा दृश्य उसने कई बार देखा है, गंगा किनारे पानी में माँ दुर्गा को विसर्जित करते समय.. .. .. ठीक वही रूप, ठीक वही आँखें, ठीक वही परितृप्ति.. .. ..।

आज एकादशी, उमा का जन्मदिन है।

शुभ विजया

झारखंड भ्रमण एक अलग अंदाज़ में

शुभंकर मंडल

आम तौर पर मनुष्य दूर भ्रमण करने के लिए ट्रेन, बस, कार या हवाई जहाज़ का प्रयोग करता है। पर मेरे मन में कुछ अलग सा खयाल आया, सोचा कहीं घूम आऊँ, परंतु ट्रेन, बस, कार या हवाई जहाज़ से नहीं, बल्कि बाईक सवारी से। क्योंकि बाईक सवारी से भ्रमण एक अजीब सा नशा है। ये उन्हें ही मालूम है, जिन्होंने की है। यह नशा मुझे भी है, इसलिए मैं एक बाईक सवारी दल के साथ भी जुड़ा हूँ जिसका नाम है "वेगाबॉन्ड राइडर्स 2020"। इस सवारी दल के साथ मैंने पहले भी कई छोटे-बड़े भ्रमण किया है।

इस बार योजना बनी कोलकाता से झारखंड भ्रमण करने की। भ्रमण शुरू करने का तारीख ठीक हुआ 17.08.2021 से 21.08.2021 एवं एक नौ सदस्यों की टोली का गठन हुआ जिसमें शामिल थे – देश गांगुली, पॉल विस्वास (ई॰एस॰आई॰सी॰ कर्मचारी), दिपांजन विस्वास (ई॰एस॰आई॰सी॰ कर्मचारी), श्रीजित पॉल, शुभम सरकार, पराग कुमार नाग, शुरोजित रॉय, बीथिन चक्रवर्ती एवं मै। आखिर में भ्रमण परियोजना बनाई गयी, जिसके अनुसार हमें डनलौप-बर्धमान-दुर्गापुर-धनबाद-रांची-लोहारदगा होते हुए नेतारहाट पहुँचना था एवं वापसी के दौरान नेतारहाट से लोहारदगा-जमशेदपुर-घाटशिला-बेलपहाड़ा-झारग्राम-खड़गपुर होते हुए डनलौप आना था।

लगभग एक महीने की तैयारी के पश्चात 17.08.2021 को हमने अपना झारखंड भ्रमण अभियान डनलप से सुबह पाँच बजे शुरू किया। पहले दिन हमारा लक्ष्य था रांची पहुँचने का जो कि कोलकाता से लगभग 480 कि.मी. हैं। हमने अपना नाश्ता लगभग 170 कि.मी. की सवारी के बाद अंडाल में किया। उसके बाद हम झारखंड में प्रवेश करने के पश्चात धनबाद में स्थित "तोपचाची झील" पहुंचे, जो कि छोटी-छोटी पहाड़ियों के बीच स्थित हैं। पहाड़ की घाटियों के बीच इस हरे-नीले झील का नज़ारा बहुत की मनमोहक था। हमने लगभग एक घंटा वहीं पर बिताया। दोपहर भी हो गया था और देर भी हो चुकी थी साथ ही साथ हमारे पेट में चूहों का दौड़ना भी शुरू हो गया था। हम वहाँ से रांची की ओर निकल पड़े एवं रास्ते पर ही एक ढाबे पर दोपहर का भोजन करने के लिए रुके। मौसम भी खराब हो रहा था और भोजन खतम होते-होते ज़ोर से बारिश शुरू हो गई। पर हमे रुकना मंजूर नहीं था और बिना देरी किए रेनकोट पहनकर सवारी शुरू की। बारिश बहुत तेज़ हो रही थी और रुकने का भी नाम नहीं ले रही थी। जिसके कारण हमारी सवारी की रफ्तार भी धीमी हो गई थी। अब तो शाम भी ढल गई पर बूँदा-बूंदी अभी भी नहीं रुकी। दो तीन घंटों तक बारिश में धीमी रफ्तार से सवारी के कारण हमारे पहले दिन का लक्ष्य पूरा करना असंभव था क्योंकि हमारे टोली के कई सदस्यों को रात के दौरान देखने में समस्या आ रही थी। फिर भी हम रांची से 20 कि.मी. पूर्व चकला नामक एक जगह तक पहुँच चुके थे, तब रात 8 बज रहा था और सभी सवार थक भी चुके थे। इसलिए हमने एक शानदार होटल देखकर रुकने का निर्णय लिया। होटल में घुसकर हमने देर न करते हुए नहा धोकर रात का भोजन कर लिया एवं विश्राम के लिए चले गए। इस प्रकार 15 घंटों में लगभग 460 कि.मी. की लंबी सवारी के बाद हमारे

पहले दिन का सफर समाप्त हुआ।

द्वितीय दिन 18.08.2021 तारीख को हमे जोन्हा झरना, हुंडू झरना एवं पत्रातू घाटी देखते हुए नेतारहाट पहुँचना था जोकि लगभग 300 कि.मी. का सफर था। हमने प्रातः 8 बजे जोन्हा के लिए अपनी सवारी शुरू की जो हमारे होटल से 32 कि.मी. की दूरी पर मौजूद थी। हमने सवारी के दौरान हमने प्रकृति के अद्भुत नज़ारों का भी आनंद उठाया – चारों तरफ हरियाली, ढलान सड़कें और ठंडी-ठंडी हवाएँ। हमने जोन्हा झरने तक की दूरी करीब एक घंटे में पूरी कर ली। जहां हमने बाईक पार्क कि थी वहाँ से झरना देखने के लिए हमे लगभग 400 सीढ़ी उतरना था जो कि एक कठिन काम था। फिर ज़्यादा देर न करते हुए हमने सीढ़ी उतरना शुरू किया। करीब आधे घंटे में हम झरने को देखने के लिए अंतिम सीढ़ी तक पहुँच गए। झरने का दृश्य एवं पानी के गिरने कि ध्वनि बहुत ही आकर्षक थी। हमने झरने के निकट लगभग आधा घंटा बिताया। अब वापस 400 सीढ़ी चढ़ने कि बारी थी जोकि और भी ज्यादा मुश्किल थी। चलते-ठहरते हमने करीब 45 मिनट में यह चढ़ाई पूरी की। ऊपर तक पहुँचने के बाद भूख अब कसके लगने लगी थी क्योंकि हमने सुबह से चाय बिस्कुट के सिवाय कुछ भी नहीं खाया था और 11 भी बज चुका था। हमने वहीं पर नाश्ता किया हमारे अगले स्थल हुंडू झरने को देखने के लिए निकल पड़े।

अब हमारी सवारी और भी रोमांचक थी। हमे पहाड़ों के बीच से कच्ची-पक्की सड़कों एवं जंगलों के बीच से गुज़रना पड़ा, मानों कोई सपना हो। जोन्हा से हुंडू करीब 17 कि.मी. दूर है। पर यह दूरी पूरी करने में हमे करीब डेर घंटा लगा क्योंकि हमे सटीक रास्ता मालूम नहीं था। गूगल मैप के भरोसे चलना पड़ रहा था और गूगल मैप कभी कभी धोखा दे देता है यह सभी को पता हैं। गूगल मैप के कारण हम लगभग 8 कि.मी. गलत रास्ते पर घुस गए जंगलों के बीच जहां रास्ता पूछने के लिए दूर-दूर तक कोई भी नहीं था। फिर हमे बहुत दूर तक वापस आने के बाद स्थानीय लोगों से सही रास्ता मालूम पड़ा। अंत में हम हुंडू पहुँचने में सफल हुए। सुवर्णरेखा नदी पर प्रकृतिक रूप से बनी इस झरने कि उच्चता लगभग 320 फिट है।

इस बार झरने को देखने के लिए हमे उतरना था 750 सीढ़ी और हल्की हल्की बूँदा-बूंदी भी शुरू हो चुकी थी। मौसम भी खास अच्छा नहीं था। और वैसे भी जोन्हा कि 400 सीढ़ी उतारने एवं चढ़ने के बाद सभी थके भी हुए थे। हमने खराब मौसम को देखते हुए कुछ देर प्रतीक्षा की, इसी बीच बादल गरजते हुए झमाझम बारिश शुरू हो गई। प्रतीक्षा के हमने फैसला किया, कि हम हुंडू झरने को नीचे से न देखकर थोड़ा बहुत ऊपर से देखते हुए पत्रातू घाटी की ओर प्रस्थान करेंगे जोकि वहाँ से 65कि.मी. की दूरी पर था। अभी भी बारिश थमने का नाम नहीं ले रही थी। अंत में हमने रेनकोट पहनकर फिरसे सवारी शुरू की। अभी दोपहर का डेर बज चुका था। इस ज़ोरों की बारिश के अंदर की हमने लगभग 2 घंटे में पतरातू घाटी पहुँचने का रास्ता तय किया, पर थकना माना था क्योंकि आज का लक्ष्य अभी भी 150 कि.मी. दूर था। इसके बावजूद पतरातू घाटी के अद्भुत नज़ारों ने मानों हमे रोक लिया था। पहाड़ों के ऊपर से बहुत नीचे सड़कें साँप जैसी एवं वाहनें चींटी जैसी नज़र आ रही थी। इधर भूख भी सातवें आसमान पर थी। फिर कुछ समय एक जगह पर बिताने के बाद घाटी से नीचे उतरकर एक जगह दोपहर का भोजन किया। अब बारिश भी रुक चुकी थी पर आसमान में बादल अभी भी थे। भोजन करते करते 4:30 बज चुका था और बूँदा-बूंदी फिरसे शुरू होने लगी। अब तो ऐसा लगने लगा था कि, झारखंड में बारिश हमारा पीछा नहीं छोरेगी और अंधेरा भी हो रहा था। आज भी हमें अपना फैसला बदलना पड़ा और नेतारहाट के बजाय नेतारहाट से 75 कि.मी. पूर्व लोहारदगा तक पहुँचने का फैसला हुआ। तेज़ बारिश, अंधेरा और बीच-बीच में खराब सड़क के कारण हमे उसदिन लोहारदगा पहुँचने में भी रात 9 बज गया, नेतारहाट तो दूर की बात थी। सभी सवार थके हुए थे एवं जल्दी से भोजन

खतम करके सो गए।

दो दिनों से लंबी-लंबी दूरी तय करने के बाद तृतीय दिन 19.08.2021 तारीख को हमारा सफर तुलनात्मक बहुत ही कम, सिर्फ 75 कि.मी. की होनी थी। हमने सुबह 9 बजे नेतारहाट के उदेश्य से अपनी सवारी शुरू की। नेतारहाट, जिसे "छोटनागपुर की रानी" भी कहा जाता है, झारखंड का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। ऊंचाई एवं सुहाने मौसम के कारण इसे "छोटी दार्जीलिंग" भी कहा जाता है। यहाँ को जाने वाली सड़क एवं चारों ओर पहाड़ियों का दृश्य अत्यंत मनमोहक है। इस रास्ते से जब हमारे नौ मोटर बाइकों की टोली 100 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से भाग रही थी, तब वह नज़ारा देखने लायक था। बीच में हमने एक जगह पर अपना नाश्ता भी कर लिया था। हम नेतारहाट 12:30 बजे तक पहुँच गए। एक बात तो बताना भूल ही गया, पहाड़ पर चढ़ना शुरू करते ही बादलों ने हमारा स्वागत किया और होना क्या था बीच रास्ते पर ही शुरू हो गयी बारिश। आज भी हमे रेनकोट पहनना पड़ा। पर आज बारिश ने ज्यादा पीछा नहीं किया। होटल पहुँचते-पहुँचते बारिश रुक चुकी थी, धूप खिल चुका था और मौसम भी सुहाना हो गया था।

देर न करते हुए हम अपना सामान होटल में रखकर नहाकर नेतारहाट के प्रमुख पर्यटन स्थलों को देखने निकाल परे, जिसमें शामिल थे- सनराइज़ पॉइंट, नाशपती के बगीचे, निचली घागरी झरना, नेतारहाट स्कूल, मैगनोलीया सनसेट पॉइंट, आदि। नेतारहाट की सुंदरता ऐसी है, मानों भगवान नें नेतारहाट को सौंदर्यता का वरदान दिया हो। इसी प्रकार घूमते-घूमते श्याम हो गई थी। होटल आकार गप-शप-मस्ती करते-करते रात हो गई। फिर बाहर जाकर रात का खाना खाया और वापस होटल आकार सो गए।

चतुर्थ दिन, यानि 20.08.2021 को हमारा सफर फिर से लंबा था। हमे इस दिन दस्सम झरना देखते हुए जमशेदपुर होकर घाटशिला में स्थित गालूडीह तक पहुँचना था, जो कि लगभग 330 कि.मी. का सफर था। हमने नेतारहाट से 7 बजे के करीब अपनी सवारी शुरू की। रास्ते में हमने नाश्ता भी किया। उसके बाद चलते-रुकते 1 बजे के करीब दस्सम झरना तक पहुंचे। इस झरने का शोर हमे बहुत दूर से सुनाई दे रहा था। यहाँ पानी का बहाव भी बहुत ज्यादा था। सबसे आसान जो चीज़ था – वो हैं यहाँ सीढ़ियाँ बहुत ही कम थी। इसलिए हम सभी आसानी से देख सके और समय बिता सके। उसके बाद 2:30 बजे के लगभग हमने वहाँ से प्रस्थान किया और चलने लगे गालूडीह की ओर। रास्ते पर हमने दोपहर का भोजन भी किया। फिर जमशेदपुर पहुँचते-पहुँचते अचानक जोरदार बारिश शुरू हो गई। हमे एक ढाबे पर रुकना पड़ा और रेनकोट पहनना पड़ा। उसके बाद फिर से निकल पड़े गालूडीह की ओर।

बीच में हमने सोचा दुआर्सिनि मंदिर में जाने की सोची एवं गूगल मैप सेट किया। प्रमुख हाईवे से लगभग 10 कि.मी. गाँव एवं जंगल के रास्ते से होते हुए हम एक ऐसी जगह जा पहुंचे, जहां पर रास्ता खतम एवं पूरी तरह से घना जंगल शुरू हुआ। उस समय शाम 7 बज चुका था। हमको तो सिर्फ रात में जंगल सफारी का आनंद लेना था। फिर क्या था रात को उस जंगल में कुछ समय बिताने के बाद हम वहाँ से वापस हाईवे की ओर लौटे और गलुडीह की तरफ चल पड़े। रात के 8 बजे तक हम अपने होटल पहुँच गए और जल्दी से खाना खाकर सो गए। यह हमारी टोली का अंतिम रात का गुज़ारा था।

आखरी दिन, यानि 21.08.2021 तारीख को हमें गलूडीह से बुरुडी बांध, धारागिरि झरना देखकर कोकराझार के घने जंगल के भीतर से होकर बेलपहारी, झारग्राम, खड़गपुर के रास्ते कोलकाता लौटना था जोकि कुल 300 कि.मी. के लगभग था। हमने होटल से सुबह 7 बजे सवारी शुरू की और एक घंटे में बुरुडी बांध पर पहुँच गए। यह बांध तीन तरफ से पहाड़ों और जंगलों से घिरा हुआ है जिससे इसकी प्राकृतिक

सुंदरता और बढ़ जाती है। इसी बांध पर हमने अपना नाश्ता भी किया। उसके पश्चात घंटाभर का समय काटकर धारागिरि झरना देखने चले गए जो कि जंगलों के अंदर एक छोटा सा झरना था और वहाँ पैदल जाए बिना कोई रास्ता न था।

आखिरकार, पाँच दिनों में की गई सवारी का असली मज़ा तो अब आना था। यह था कोकराझार के घने जंगलों के रास्ते बेलपहारी पहुँचना जो कि लगभग 42 कि.मी. लंबा था। यह जंगल एक समय माओवादियों का डेरा हुआ करता था और अभी जंगली हाथियों का घर है। जंगलों के बीच मोबाइल नेटवर्क भी काम नहीं कर रहा था। सात-आठ किलो मीटर बाद एक गाँव मिला, वहीं पर रास्ता पूछकर हम आगे बढ़ते जा रहे थे। रास्ता तो लगभग था ही नहीं, कहीं पहाड़ की खाई थी तो कहीं पानी, कहीं ढलान थी तो कहीं चढ़ाई। फिर भी हमने हार नहीं मानी, धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए। इस तरह 4 घंटे में हमने यह खतरनाक रास्ता तय किया। उसके बाद हमने आखिरकार बेलपहारी होकर पश्चिम बंगाल में प्रवेश किया। फिर एक जगह पर दोपहर का भोजन किया और झारग्राम, खड़गपुर के रास्ते चलते-ठहरते रात 10 बजे कोलकाता पहुंचे और टोली के सभी सदस्यों को अलविदा कहते हुए सभी अपने-अपने घर चले गए। इसी के साथ हमारा पाँच दिनों का लगभग 1500 कि.मी. का झारखंड भ्रमण समाप्त हुआ।

मुकेश कुमार

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को उनके जीवन एवं कार्यक्षेत्र के संबंध में निर्णय लेने का अधिकार होना एवं उन्हें व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं कानूनी अधिकार, क्षमता का विकास के अवसर प्रदान करना है। महिला सशक्तिकरण उनका समाज व दुनिया को रहने के लिए एक बेहतर जगह बनाने और समावेशी भागीदारी के रास्ते पर आगे चलने में मदद देती है। वे अपनी शक्तियों संभावनाओं, क्षमताओं, योग्यताओं अधिकारों तथा जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक होती हैं। जिस प्रकार जीवन जीने के लिए किसी व्यक्ति को आक्सीजन की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार किसी देश को अगर विकसित होना है, तो वहाँ की महिलाओं का शिक्षित होना बहुत जरूरी है। नारी शिक्षित होने के बावजूद आज भी घर परिवार, समाज और यहाँ तक कि वह स्वयं अपने मामलों में निर्णय लेने में असमर्थ है। उसकी मानसिक क्षमता आज भी संदिग्ध बनी हुई है। निर्णय केवल पुरुष लेता है और नारी उस पर अमल करती है। भले ही वह मानसिक रूप से निर्णय पर सहमत न हो। अपनी निर्णय अक्षमता के कारण ही दुनिया भर में कितनी महिला रोज ही अत्याचार, बलात्कार, शोषण व अन्याय का शिकार बनी रही है। जब भी निर्णय लेने का वक्त आता है, नारी पुरुष पर निर्भर हो जाती है। सिर्फ इसलिए क्योंकि वह स्वयं को मानसिक रूप से अधिक सक्षम नहीं मानती।

आज महिलाओं की उच्चशिक्षा, प्रोद्यौगिकी और तकनीकी प्रशिक्षण के प्रभाव, महिला आंदोलनों और पश्चिम प्रभाव से पनपती संस्कृति के कारण महिला की स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता को लेकर क्रांतिकारी स्थिति है। वैश्वीकरण के इस युग में महिला की आदमी शक्ति, बुद्धिमता, कार्यक्षमता तथा सामर्थ्य ने उसके आस्तित्व को न सिर्फ स्थापित किया, बल्कि महिला ने अपने औचित्य को सिद्ध करने के लिए किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए अपने आप को ठीक कर लिया है। आज समूचे विश्व मे महिलाएं आर्थिक रूप से स्वावलंबी व सशक्त बनी हैं, लेकिन दुर्भाग्य है की महिलाओं पर अत्याचार व उत्पीड़न का ग्राफ भी उतनी ही तेजी से बढ़ रहा है। शोषण, अत्याचार उत्पीड़न, भेदभाव आदि का शिकार भी है। कई अधिनियम और नियम महिलाओं की स्थिति को सुधारने हेतु बनाए गए हैं, किन्तु इन अधिनियमों और नियमों से केवल दंड देकर अपराध कम किए जा सकते हैं। पर समाप्त नहीं, क्योंकि इन अधिनियमों से समाज की मानसिकता को नहीं बदला जा सकता।

महिला सशक्तिकरण के रास्ते में निम्नलिखित रुकावटें हैं-

1. सामान्यत: यह देखा जाता है की भारतीय महिलाओं को पारिवारिक एवं सामाजिक विषयों पर निर्णय लेने का अधिकार नहीं होता है जिस घर में महिलाएं कमाती हैं वहाँ भी उन्हें निर्णय लेने का अधिकार नहीं दिया जाता है।
2. भारतीय समाज में आज भी, खासतौर पर मध्यवर्गीय परिवार में, लड़कियों को अकेले बाजार जाने नहीं दिया जाता है।
3. आज भी लड़कों के मुकाबले लड़कियाँ बहुत कम विद्यालय जाती हैं और जो जाती भी हैं वे शायद ही मैट्रिक के आगे पढ़ पाती हैं।
4. घरेलू हिंसा महिला सशक्तिकरण के रास्ते में बहुत बड़ी रुकावट है।

एक अध्ययन में पता चला है कि आज भी हमारे देश में 5 लड़कियों मे 2 घरेलू हिंसा की शिकार होती हैं।

5. हमारे देश में पुरुषों के मुकाबले बहुत कम महिलाएं काम पर जाती हैं और जो जाती भी है उनके घर की हालत अच्छी नहीं होती है।

इन सभी परेशानियों एवं प्रचलित कुरीतियों, कुप्रथाओं को देखते हुए भारत सरकार ने इनसे महिलाओं को मुक्त कराने के लिए बहुत से कानून एवं अधिनियम पारित किए हैं जो इस प्रकार है-

1. दहेज निषेध अधिनियम(1961)- इसके तहत शादी के पहले या बाद में महिलाओं से दहेज लेना और देना दोनों ही अपराध की श्रेणी मे आते हैं।
2. अनैतिक देह व्यापार (रोकथाम) अधिनियम(1956)- इसके तहत लड़कियों के यौन शोषण के लिए उनकी तस्करी की रोकथाम के प्रावधान है। दूसरे शब्दों मे यह अधिनियम वेश्यावृति के उद्देश्य से महिलाओं और लड़कियों की तस्करी की रोकथाम के लिए बनाया गया है।
3. न्यूनतम मजदूरी अधिनियम (1948)- इसके तहत पुरुष और महिला श्रमिकों के बीच मजदूरी में भेदभाव या उनको मिलने वाली न्यूनतम मजदूरी में भेदभाव की अनुमती नहीं देता है।
4. खान अधिनियम (1952) एवं कारखाना अधिनियम (1948) इन दोनों अधिनियम में यह प्रावधान है कि महिलाओं को 7 बजे शाम से 6 बजे सुबह के बीच मे काम पर नहीं लगाया जा सकता है और इसके साथ ही काम के दौरान उनकी सुरक्षा का भी ध्यान रखना अनिवार्य है।
5. महिलाओं का अश्लील प्रतिनिधित्व (प्रतिषेध) अधिनियम, (1986)- यह अधिनियम महिलाओं को विज्ञापनों के माध्यम से या प्रकाशन, लेखन, पेंटिंग या किसी अन्य तरीके से अभद्र प्रदर्शन को प्रतिबंधित करता है।
6. राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम (1990)- सरकार ने इस आयोग का गठन महिलाओं के संवैधानिक और कानूनी अधिकारों और अन्य सुरक्षा उपायों से संबधित सभी मामलों का अध्ययन और निगरानी करने के लिए किया था।
7. कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम (2013)- यह अधिनियम सार्वजनिक और निजी, संगठित या असंगठित दोनों ही क्षेत्रों में सभी कार्यस्थलों पर महिलाओं को यौन उत्पीड़न से सुरक्षा प्रदान करता है।

अन्य प्रयास

महिलाओं की दशा सुधारने हेतु भारत सरकार द्वारा सन 1985 में महिला एवं बाल विकास विभाग की स्थापना तथा 1992 में राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की गई तथा देश में अंनर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाने लगा। भारत सरकार द्वारा वर्ष 2001 को

महिला सशक्तिकरण वर्ष भी घोषित किया गया। इसी प्रकार विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का क्रियान्वयन भी सरकार द्वारा समय-समय पर किया गया है। जिनमें प्रमुख हैं- किशोरी शक्ति योजना, स्वयंसिद्धा योजना, सरस्वती सायकल योजना, महिला समाख्या, बालिका बचाओ योजना, इंदिरा महिला योजना, बालिका समृद्धि योजना इत्यादि।

सुझाव एवं निष्कर्ष

महिलाओं को प्रदत्त अधिकार उनके लिए बनाए गए अधिनियमों के बाद भी महिलाओं की स्थिति सोचनीय है। महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए पर्याप्त अधिनियम है, स्वतंत्रता के पश्चात से वर्तमान तक विभिन्न अधिनियम जैसे- हिन्दू विवाह अधिनियम, विशेष विवाह अधिनियम, विवाह-विच्छेद व तलाक अधिनियम, वेश्यावृति उन्मूलन अधिनियम, गर्भपात की चिकित्सा द्वारा मान्यता जैसे प्रमुख सुधारों से महिलाओं की सामाजिक स्थिति में पर्याप्त अंतर आया है, फिर भी बहुत सी कमियाँ है, जिनकी वजह से इन कानूनों का लाभ महिलाएं नहीं उठा पाती है।

यदि हम रोज़गार के अवसरों की उपलब्धता को देखें, तो महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के मुकाबले मात्र 29 प्रतिशत है, जो पुरुषों के 83 प्रतिशत से बहुत ही कम है। इसके पीछे का मुख्य कारण महिलाओ की कार्यस्थल पर सुरक्षा कौशल की कमी पुरुषों का वर्चस्व आदि जिम्मेदार है उसमें इस असमानता को समाप्त करने हेतु हमें माननीय सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा निर्देशित 'विशाखा गाइड लाइन को' लागू करना होगा तथा महिलाओं से संबंधित को शिकायतों के निवारण हेतु शिकायत निवारण समिति को मूर्त रूप में स्थापित करना होगा।

भारतीय संविधान के अंतर्गत स्त्री एवं पुरुष दोनों के लिए समान अधिकार बनाए गए हैं, किन्तु निरक्षरता एवं घरेलू तथा भारतीय धार्मिक परंपराओं की वजह से महिलाएं उन समस्त अधिकारों का पूरी तरह से उपयोग नहीं कर पाती है। इसके अलावा लिंग-भेदभाव, घरेलू हिंसा, महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध, उनकी प्रगति में सदैव बाधक रहे हैं। इसके बावजूद भी भारतीय नारी ने हर क्षेत्र में सफलता हासिल की है। आज भारतीय नारी हर क्षेत्र में कार्यरत है।

अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों में भारतीय नारी हर क्षेत्र मे आगे बढ़ रही है। हम यह तो नहीं कह सकते की महिलाओं के हालत पूरी तरह बदल गए है पर पहले की तुलना मे इस क्षेत्र मे बहुत तरक्की हुई है। आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति पहले से अधिक सचेत हैं। महिलाएँ अब अपनी पेशेवर जिंदगी (सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक) को लेकर बहुत अधिक जागरूक हैं।

कोरोना

आशुतोष मिश्र

मैं कोरोना हूँ। अपनी पहचान करवाने की जरुरत शायद अब मुझे नहीं है। आप सभी मुझे अच्छे से पहचानते और महसूस भी कर चुके होंगे। आज मै अपने बारे में कुछ बताने नहीं आया हूँ बल्कि मेरे आने से आपके सामाजिक, आर्थिक और दैनिक जीवन में कितने सारे मूल भूत परिवर्तन आए जो मैंने महसूस किया उसकी वाचना मै आज करने आया हूँ। यूँ तो मै विश्य के प्रायः सभी देशों में फैला पर आपके देश भारत की बात ही कुछ और है। आपके देश का सचमुच में कोई सानी नहीं है। आपके देश में मै आज से नहीं हूँ आज तो मै दिखा हूँ था तो मै बहुत पहले से पर अपने नाम से अनजान था। नाम मिलने पर आपके मुखों की मिठास बना और इतना आपलोगों ने मुझे पसंद किया की आपके देश में प्रायः सभी रोगों की जगह मैंने ही ले ली। मै आपका आभारी हूँ आप सभी ने मुझे इतना पसंद किया। हालाँकि मुझसे निजात पाने का उपाय बहुत पहले ही आपके सामने आ गया था - हाथ साफ करते रहना। मुँह पर लगोंट लगाए रखना। भीड़ भाड़ वाली जगहों से परहेज बनाये रखना। सभी चीज़ें तब तक जब तक की मैं पूरी तरह से विलीन न हो जाऊँ।पर मै आभारी हूँ आप सभी का इतनी सारी जानकारी होने के बाद भी आपने वो हर चीज की जो आपको मेरे करीब लाती है। जितना प्यार आपने मुझसे किया उससे कई ज्यादा प्यार मैंने आपको देने का प्रयास किया है। कुछ लोगों को तो मै इतने अंदर तक चाहने लगा की उनसे दूर रहना नामुमकिन सा हो गया और ऐसी स्थिति तक मै उन्हें ले गया जहाँ मुझे उनसे कोई अलग नहीं कर सकता। मैंने इस दौरान आपकी एकता और विश्वास की धज्जियां उड़ा दी। आपको इस सच्चाई से अवगत कराया की ऐसा भी समय आ सकता है जब आपके अपने आपको कब पराया समझने लगते है पता भी नहीं चलता। ऐसे ऐसे संस्थानों, कल कारखानों तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाली चीज़ों पर मैंने ताले लगवा दिए जिसको सपने में भी बंद होने देख आपके पसीने छूट जाते थे। मैंने वो कर के दिखाया क्यों की मै अपने चरित्र को बदलने वालों में से नहीं हूँ। आप सारे लोग भी धन्यवाद के पात्र हैं क्यों कि आपने भी मेरा भरपूर साथ दिया बिना आपके सहयोग से ये सम्भव कर पाना असंभव सा था।

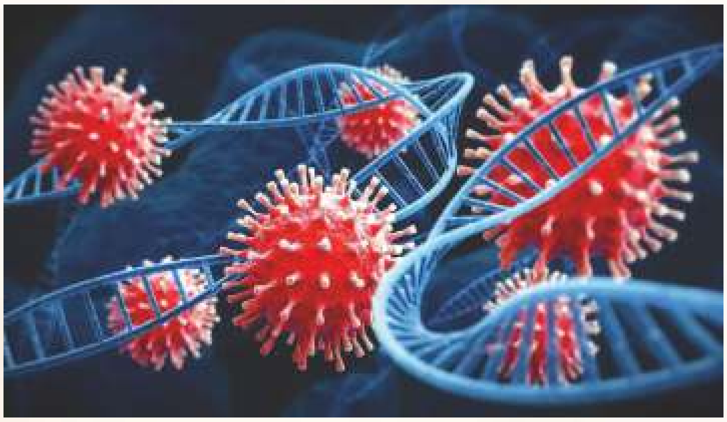

मैं दावे के साथ कह सकता हूँ की इन चंद वर्षो में जो क्षति चाहे वो सामाजिक हो धार्मिक हो आर्थिक हो या मौलिक मूल्यों की हो मैंने आपकी की है आने वाले कई दशक तक आपको मुझे भूलना आसान नहीं होगा।

मैं फिर आऊंगा शायद एक नए नाम के साथ नए रूप में नई तरह की आपदा फ़ैलाने बस आप इसी तरह मुझसे दूर रहने के सारे नियमों की धज्जियां उड़ाते रहिये। आपके कुछ प्रसिद्ध डायलाग मुझे बहुत पसंद है - कोरोना तो सबको होगा मास्क क्यों पहनना है। एक दिन तो मरना ही है तो डर डर कर क्यों जीना। जो डर गया समझो मर गया। मास्क लगाने से साँस लेने में दिक्कत होती है इस लिए इसे नहीं लगाना।

आप सभी मुझे चाहने वाले मुझे इतने हल्के में लीजिये जिससे मैं आपके जीवन में भरी से भरी बदलाव कर सकूँ। एक बात के लिए आपको तो मेरी तारीफ करनी ही होगी कि मैंने किसी के साथ भेद भाव नहीं किया सभी के साथ सामान व्यवहार किया है। न मैंने पैसे को देख कर न धर्म या जाति को देख कर अपने बर्ताव में बदलाव किया है और न आगे भी ऐसा करूँगा। मेरे लिए आप सभी मेरे अपने है। जो मुझे जितना प्यार करेगा मैं उससे कई गुना ज्यादा उसे प्यार दूंगा। कहने को तो बहुत कुछ है इतना कि ख़त्म होने से रहा। शब्द के सीमा की वजह से अपने मुख को विराम दे रहा हूँ। आपकी गलतियों का परिणाम मै कोरोना अब आपको अलविदा कहता हूँ।

बच्चों की तूलिका से

अयंतिका बिश्वास
पुत्री शुभेन्दु बिश्वास

सुनिधि बर्मन
पुत्री सुमित बर्मन

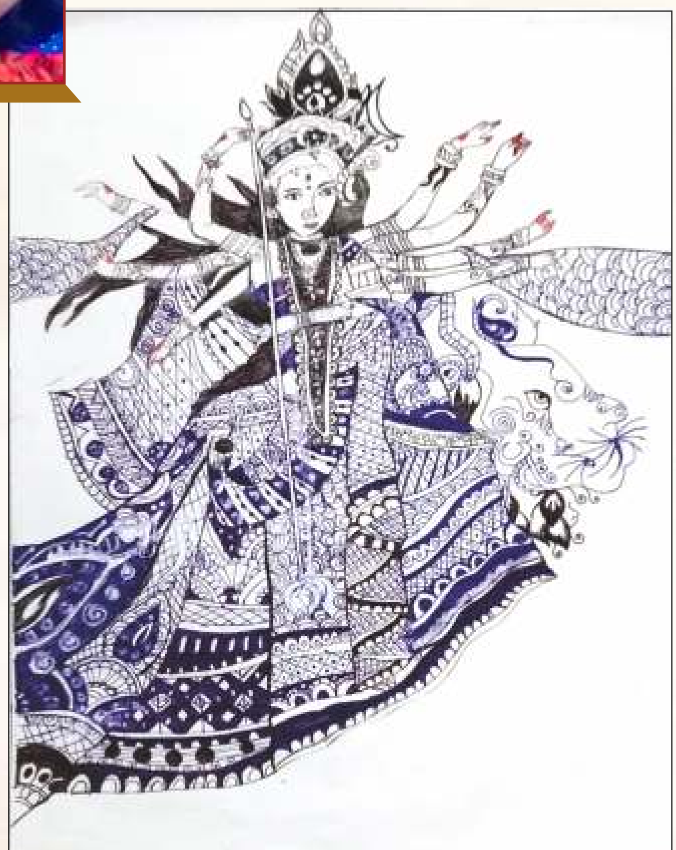

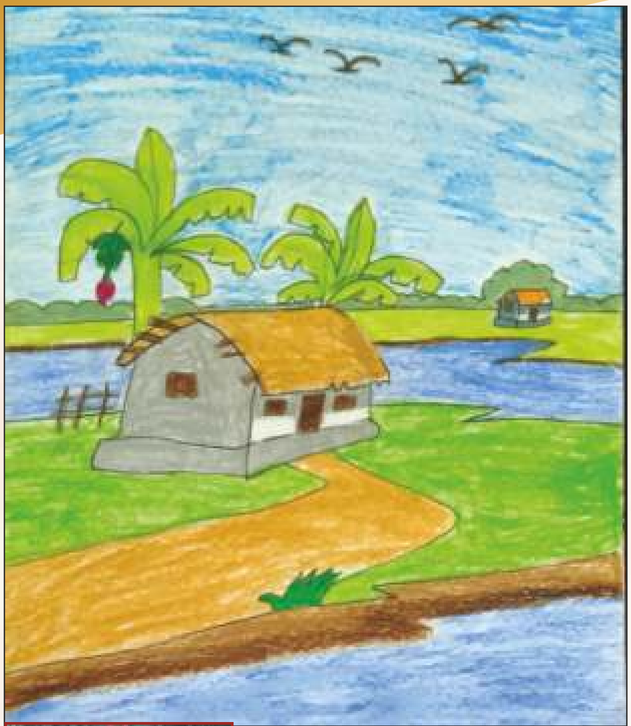

सृजनी टिकादार
पुत्री सुकांत टिकादार

शिंजन टिकादार
पुत्र सुकांत टिकादार

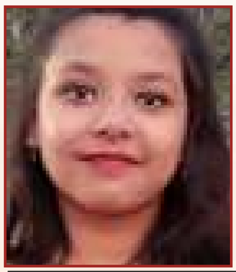

दीक्षा शुक्ला
पुत्री बिनय कुमार शुक्ला

स्वप्नील दास
पुत्र- प्रद्युत दास

राकेश रोशन

भारत के ओलंपिक पदक विजेता
(सोशल मीडिया से संकलित)

खिलाड़ी	पदक	खेल	ओलंपिक
नॉर्मन प्रिचर्ड	रजत	पुरुष 200मी	पेरिस 1900
नॉर्मन प्रिचर्ड	रजत	पुरुष 200मी हर्डल्स	पेरिस 1900
भारतीय हॉकी टीम	स्वर्ण	पुरुष हॉकी	एम्स्टर्डम 1928
भारतीय हॉकी टीम	स्वर्ण	पुरुष हॉकी	लॉस एंजिल्स 1932
भारतीय हॉकी टीम	स्वर्ण	पुरुष हॉकी	बर्लिन 1936
भारतीय हॉकी टीम	स्वर्ण	पुरुष हॉकी	लंदन 1948
भारतीय हॉकी टीम	स्वर्ण	पुरुष हॉकी	हेल्सिंकी 1952
भारतीय हॉकी टीम	स्वर्ण	पुरुष हॉकी	मेलबर्न 1956
केडी जाधव	कांस्य	पुरुष बेंटमवेट रेसलिंग	हेल्सिंकी 1952
भारतीय हॉकी टीम	रजत	पुरुष हॉकी	रोम 1960
भारतीय हॉकी टीम	स्वर्ण	पुरुष हॉकी	टोक्यो 1964
भारतीय हॉकी टीम	कांस्य	पुरुष हॉकी	मेक्सिको सिटी 1968
भारतीय हॉकी टीम	कांस्य	पुरुष हॉकी	म्यूनिख 1972
भारतीय हॉकी टीम	स्वर्ण	पुरुष हॉकी	मास्को 1980
लिएंडर पेस	कांस्य	पुरुष सिंगल्स टेनिस	अटलांटा 1996
कर्णम मल्लेश्वरी	कांस्य	महिला 54किग्रा वेटलिफ्टिंग	सिडनी 2000
राज्यवर्धन सिंह राठौड़	रजत	पुरुष डबल ट्रैप शूटिंग	एथेंस 2004
अभिनव बिंद्रा	स्वर्ण	पुरुष 10मी एयर राइफल शूटिंग	बीजिंग 2008
विजेंदर सिंह	कांस्य	पुरुष मिडिलवेट बॉक्सिंग	बीजिंग 2008
सुशील कुमार	कांस्य	पुरुष 66किग्रा रेसलिंग	बीजिंग 2008
सुशील कुमार	रजत	पुरुष 66किग्रा रेसलिंग	लंदन 2012
विजय कुमार	रजत	पुरुष 25मी रैपिड पिस्टल शूटिंग	लंदन 2012
साइना नेहवाल	कांस्य	महिला सिंगल्स बैडमिंटर	लंदन 2012
मैरी कॉम	कांस्य	महिला फ्लाइवेट बॉक्सिंग	लंदन 2012
योगेश्वर दत्त	कांस्य	पुरुष 60किग्रा रेसलिंग	लंदन 2012
गगन नारंग	कांस्य	पुरुष 10मी एयर राइफल शूटिंग	लंदन 2012
पीवी सिंधु	रजत	महिला सिंगल्स बैडमिंटन	रियो 2016
साक्षी मलिक	कांस्य	महिला 58किग्रा रेसलिंग	रियो 2016
मीराबाई चानू	रजत	महिला 49 किग्रा वेटलिफ्टिंग	टोक्यो 2020
लवलीना बोरगोहेन	ब्रॉन्ज़	महिला वेल्टरवेट (64-69 किग्रा)	टोक्यो 2020
पीवी सिंधु	ब्रॉन्ज़	महिला सिंगल्स बैडमिंटन	टोक्यो 2020
रवि कुमार दहिया	रजत	पुरुष फ्रीस्टाइल 57 किग्रा	टोक्यो 2020
भारतीय हॉकी टीम	ब्रॉन्ज़	पुरुष हॉकी	टोक्यो 2020
बजरंग पुनिया	ब्रॉन्ज़	पुरुष 65 किग्रा रेसलिंग	टोक्यो 2020
नीरज चोपड़ा	स्वर्ण	पुरुष जेवलिन थ्रो	टोक्यो 2020

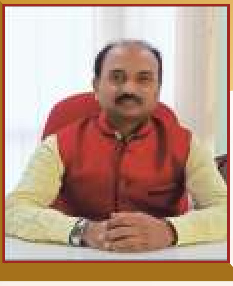

भारत की स्वतंत्रता संग्राम में अवधी भाषा का योगदान

बिनय कुमार शुक्ल

पंचतत्वों में से भोजन,वायु,जल एवं परिवेश का मनुष्य जीवन जितना प्रभाव पड़ता है उससे कहीं अधिक प्रभाव साहित्य का पड़ता है। पहली नजर में साहित्य को मनोरंजन या फिर कुछ सीमित वर्ग के लोगों के जीवन मे समय बिताने का एक साधन मात्र माना जा सकता है पर,यदि विषद रूप से इसके बारे में चिंतन-मनन करें तो पता लगता है कि जीवन का हर पहलू,हर रंग ही साहित्य है।या यूँ कहें कि साहित्य और जीवन दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं,प्रतिरूप है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

मनुष्य की हर अभिव्यक्ति और भाव भंगिमा में से साहित्य फूट-फूट कर बहता है। यदि कोई आपकी प्रशंसा करे तो आप हर्षित हो उठते हैं पर यदि अपशब्द कहे तो क्रोध का भाव उमड़ पड़ता है।ऐसे ही घृणा,संताप आदि का भाव भी प्रकट हो जाता है। इन समस्त भावों को रस का नाम दिया गया है।अब इसे रस मानें या फिर व्याकरण या फिर आम अभिव्यक्ति पर हैं तो साहित्य ही। इसी साहित्य की एक विधा या व्याकरण का अध्याय है 'वीर रस'। अर्थात ऐसी विधा जिसकी रचनाएं मन को ऐसा उद्वेलित कर दे कि व्यक्ति कुछ भी कर गुजरे। अब आज वर्तमान युग की ही देख लीजिये, युवाओं को किस प्रकार से मतिभ्रमित कर विध्वंशक कार्यों के लिये प्रेरित कर दिया जाता है कि वे अपने जीवन की आहुति तक दे डालते हैं, आत्मघाती बन जाते हैं। इस बात को हम भारत की आजादी के परवाने 'राम प्रसाद बिस्मिल जी' की रचना के अंश, 'सरफरोशी की तमन्ना आज हमारे दिल में है।

देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।' से समझ सकते हैं जिसका प्रभाव भारत के हर नागरिक के मन पर आज भी अंकित है।इन पंक्तियों को लेकर न जाने कितनी कविताओं-गीतों का सृजन हो चुका है। जब भी सुने शरीर की सुप्त नसों में जोश भर उठता है।

यह केवल उनकी ही बात नहीं है। बंगाल के बाँकुरे खुदीराम बोस के मुख से निकली पंक्तियाँ, 'एकबार बिदाई दे माँ घुरे आसी....देखबे सुनबे सारा भारतवासी' उनके त्याग पर आंखों से आँसू निकलने के लिये बाध्य कर देती है।

रामधारी सिंह दिनकर जी की कुछ रचनाएँ देखें जो पाठक वर्ग में एक नया जोश भर देता है:-

रोक युधिष्ठर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर
पर फिरा हमें गांडीव गदा,
लौटा दे अर्जुन भीम वीर --(हिमालय से)
क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो;
उसको क्या जो दन्तहीन,
विषहीन, विनीत, सरल हो -(कुरुक्षेत्र से)

"दो न्याय अगर तो आधा दो,
पर इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम,
रक्खो अपनी धरती तमाम।-- (रश्मिरथी / तृतीय सर्ग / भाग 3)
जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है। -- (रश्मिरथी / तृतीय सर्ग / भाग 3)।।

अब यदि इन पंक्तियों के वाचन किया जाए तो क्या जनमानस अभिप्रेरित नहीं हो जाएगा।
भारत वर्षों तक अततताइयों से आक्रांत रहा है,पीड़ित रहा है।समय-समय पर इन उत्पीड़नों से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से युवा वर्ग को जागृत कर स्वतंत्रता के लिये प्रयास करने के लिये साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है।
इतिहास पर यदि नजर डालें तो हम पाते हैं कि राजे-रजवाड़ों में दरबारी कवि रखने की चलन रही है। राजाओं को किसी स्त्री के प्रति आकर्षित करने के उद्देश्य से या फिर युद्धभूमि में शत्रु संहार के लिये प्रेरित करने के लिये ये कवि काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं।

कालांतर में अंग्रेजो की गुलामी से मुक्ति पाने के लिये जनमानस में देशप्रेम की भावना प्रस्फुटित करने के लिये साहित्यकारों ने विशेष भूमिका निभाई है। इस आहुति में अवधी के साहित्यकारों और अवधी साहित्य का विशेष योगदान रहा है।भाषा शास्त्री डॉ० सर "जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन" के भाषा सर्वेक्षण के अनुसार अवधी बोलने वालों की कुल आबादी 1615458 थी। मौजूदा समय में शोधकर्ताओं का अनुमान है कि 6 करोड़ से ज्यादा लोग अवधी बोलते हैं। भारत के उत्तर प्रदेश प्रान्त के 19 जिलों- सुल्तानपुर, अमेठी, बाराबंकी, प्रतापगढ़, प्रयागराज, कौशांबी, फतेहपुर, रायबरेली, उन्नाव, लखनऊ, हरदोई, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, गोंडा, अयोध्या व अंबेडकर नगर में पूरी तरह से यह बोली जाती है। जबकि 7 जिलों- जौनपुर, मिर्जापुर, कानपुर, शाहजहांपुर, आजमगढ़,सिद्धार्थनगर, बस्ती और बांदा के कुछ क्षेत्रों में इसका प्रयोग होता है। बिहार प्रांत के 2 जिलों के साथ पड़ोसी देश नेपाल के कई जिलों - बांके जिला, बर्दिया जिला, दांग जिला, कपिलवस्तु जिला, पश्चिमी नवलपरासी जिला, रुपन्देही जिला, कंचनपुर जिला आदि में यह काफी प्रचलित है। इसी प्रकार दुनिया के अन्य देशों- मॉरिशस, त्रिनिदाद एवं टुबैगो, फिजी, गयाना, सूरीनाम सहित आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड व हॉलैंड (नीदरलैंड) में भी लाखों की संख्या में अवधी बोलने वाले लोग हैं। प्राचीन अवधी साहित्य में अधिकतर रचनाएँ देशप्रेम, समाजसुधार आदि विषयों पर और मुख्य रूप से व्यंग्यात्मक हैं। कवियों में प्रतापनारायण मिश्र, बलभद्र दीक्षित "पढ़ीस", वंशीधर शुक्ल, चंद्रभूषण द्विवेदी "रमई काका", गुरु प्रसाद सिंह "मृगेश" और शारदाप्रसाद "भुशुंडि" विशेष उल्लेखनीय हैं।

इतने बड़े अवधी पट्टी जिसका बिस्तार बिदेशों तक है वह भला आजादी की लड़ाई में अपने साहित्य से योगदान देने के कैसे दूर रह सकता है।

अवधी को हिंदी की एक उपभाषा माना जाता है पर मेरी नजर में हिंदी अवधी से ही उत्पन्न भाषा की एक अलग विधा है। मुगल काल में एक तरफ जहाँ श्रृंगार रस की रचनाओं की अधिकता रही है वहीं गोस्वामी तुलसीदास कृत "रामचरितमानस" ने हिन्दू जनमानस में अटूट भक्ति की सरिता का सृजन करने का काम किया है। रामचरितमानस में विष्णु के रूप भगवान श्री राम के मुखारबिंद से
"शिव द्रोही मम दास कहावा, सो नर मोंहि सपनेहुँ नहीं भावा" पंक्तियाँ उच्चारित कर

वैष्णव-शैव में चल रहे विरोध के कारण आपस में बँटे हिन्दू समाज को जोड़ने का गोस्वामी तुलसीदास ने इतना सुंदर और अद्भुत प्रयास किया है जो अतुलनीय है। साहित्य का यह प्रभाव ही है कि आज इन दो मतों में बँटे हिन्दू समाज एक हो चुके हैं।
किस भी परतंत्र देश के नागरिकों की सांस बड़ी मजबूरी होती है उनकी अभिव्यक्ति की भी परतंत्रता। पर रचनाकार का मन आखिर माने तो कैसे! इसी मन को मनाने के लिये रचनाकारों ने प्रतीकात्मक रचनाओं का सहारा लिया और समय-समय पर अपनी ओजस रचनाओं के माध्यम से जान जागरण का प्रयास करते रहे।

अवधी साहित्य की ही अन्य विधा भोजपुरी है या फिर इस भाषापरिवार की अन्य बहनें या फिर हिंदी। अधिकांश भाषाओं और अवधी साहित्य का प्रभाव रहा है। पंडित राधेश्याम ऐसे ही एक रचनाकार हैं जिन्होंने गोस्वामी तुलसीदास की द्वारा रचित रामचरित मानस को हिंदी भाषा में प्रस्तुत कर राम भक्ति को एक नया आयाम तो दिया ही। उन दिनों के फ़ारसी और अंग्रेज़ी रंगमंच के नाटक कंपनियों के सस्ते-अश्लिल-अशिष्ट हास्य सामग्री,प्रेम के वासना जनित बाजारू रूप चित्रण से ओतप्रोत नाटकों के वर्चस्व को भी तोड़कर रंगमंच को एक नई दिशा दी। प्रारम्भ में तो नाटक कंपनी यह मानने के लिये तैयार ही नहीं थे कि इन विषय वासना से इतर किसी विषय पर नाटक का मंचन दर्शकों को पसंद आएगा पर उनकी कालजयी रचना 'वीर अभिमन्यु' ने दर्शकों का भरपूर प्रेम और सराहना पाकर इस मिथक को तोड़ दिया। यह वही नाटक है जिसका मंचन देखने कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद से लेकर पं. मोतीलाल नेहरू और सरोजनी नायडू तक बरेली आए। राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत इस नाटक का मंचन जब उस वक्त की मशहूर न्यू अल्फ्रेड और सूर विजय नाटक कंपनी ने देशभर में किया तो अंग्रेज़ी हुकूमत ने इसे बगावत मानकर पं.राधेश्याम कथावाचक के खिलाफ राष्ट्रद्रोह का मामला शुरू करा दिया। हालांकि ये नाटक इस करीने से लिखा गया था कि कोई स्पष्ट सबूत न मिलने पर अंग्रेजों ने हथियार डाल दिए।

पंडित राधेश्याम कथावाचक ने अपने जीवनकाल में 57 पुस्तकें लिखीं एवं 150 से अधिक का संपादन किया। 'राधेश्याम रामायण' के बाद सबसे अधिक ख्याति उनके वीर अभिमन्यु नाटक को मिली। पंजाब शिक्षा बोर्ड ने इसे अपने पाठ्यक्रम में भी शामिल किया। भक्त प्रहलाद नाटक में पिता के आदेश का उल्लंघन करने के बहाने उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आंदोलन का सफल संदेश दिया।

उनकी रचनाओं में अद्भुत आकर्षण है जो श्रोता या पाठक को बरबस अपनी ओर खींच लेता है। उसका एक ज्वलंत उदाहरण निम्नलिखित पंक्तियाँ है जो इतनी जोशपूर्ण हैं कि इसके पप्रभाव का अनुमान लगा-पाना असंभव सा प्रतीत होता है।

हनुमान जी की भगवान सूर्य से प्रार्थना का अंश(राधेश्याम रामायण का अंश):-

हे सूरज इतना याद रहे,

संकट एक सूरज वंश पे है,
लंका के नीच राहु द्वारा
आघात दिनेश अंश पर है।

इसीलिए छिपे रहना भगवन
जब तक न जड़ी पंहुचा दूँ मैं,
बस तभी प्रकट होना दिनकर
जब संकट निशा मिटा दूं मैं।

मेरे आने से पहले यदि
किरणों का चमत्कार होगा,
तो सूर्य वंश में सूर्यदेव
निश्चित ही अंधकार होगा।

आशा है स्वल्प प्रार्थना ये
सच्चे जी से स्वीकरोगे,
आतुर की आर्थ अवस्था को
होकर करुणार्ध निहारोगे।

अन्यथा छमा करना दिनकर,
अंजनी तनै से पाला है,
बचपन से जान रहे हो तुम
हनुमत कितना मतवाला है।

मुख में तुमको धर रखने का
फिर वही क्रूर साधन होगा,
बंदी मोचन तब होगा
जब लक्ष्मण का दुःख मोचन होगा।

अवधी साहित्य और पंडित राधेश्याम जी की रचनाओं ने भारत की स्वतंत्रता में अतुलनीय योगदान दिया है। इनकी जितनी भी बात कही जाय, सागर की एक बूंद समान ही लगता है।

बीमाकृत व्यक्तियों के प्रति अपने कर्तव्यों के निर्वहन की विविध झलकियाँ

(सौजन्य : कर्मचारी राज्य बीमा निगम के विविध कार्यालयों की वेबसाइट)

क.रा.बी.नि.
ESIC
सामाजिक सुरक्षा
SOCIAL SECURITY